डाक पंजीकरण संख्या : Jaipur City/414/2022-24
RNI No.- RAJHIN/2013/52435

राजस्थान की आवाज ...

हिन्दी मासिक पत्रिका

राजस्थान दर्शन

प्रवासी राजस्थानियों का मुखपत्र

राजस्थान । गुजरात । महाराष्ट्र से एक साथ प्रसारित

वर्ष 13, अंक-12, जून 2026 | मूल्य ₹45/- प्रति | वार्षिक शुल्क ₹540/- प्रति, पृष्ठ संख्या- 40

वैश्विक ऊर्जा संकट

प्रधानमंत्री मोदी ने दुनिया को चेताया

दुनिया की एक बड़ी आबादी फिर से गरीबी के दल दल में फंस सकती है

विश्व पर्यावरण दिवस 2026

संगम विश्वविद्यालय : प्रबंधन शिक्षा में उत्कृष्टता और रोजगारपरकता का नया आयाम

SANGAM UNIVERSITY™
where Aspiration meets Opportunity
Accredited with NAAC

संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा

देश के उभरते हुए विश्वविद्यालयों में अग्रणी

Promoted by
Sangam Group of Insdustry

NAAC Accredited	4000+ Students	100+ Industry Oriented Programs	NCC/ NSS/ Range Rover	Advance IT Labs	Student Council	Industry Tie-Ups

"संगम के साथ - हर कदम सफलता की ओर..."

Smart Campus, Smarter Education

प्रतिमा सम्मान समारोह

Convocation-2025

Alumni meet

Sangam Farm

Cultural Event

Orientation

IT Lab

SCHOLARSHIP AVAILABLE

मेरिट स्कॉलरशिप	JEE स्कॉलरशिप	गर्ल्स स्कॉलरशिप	आर्थिक पिछड़ा वर्ग स्कॉलरशिप
एलुमनी स्कॉलरशिप	संगम ग्रुप स्कॉलरशिप	Govt. स्कॉलरशिप*	स्पोर्ट्स स्कॉलरशिप

PROGRAMME OFFERED

ENGINEERING
6 Month Internship with Stipend
B.Tech- CS | AI & Data Science | Civil | Mechanical Mining | Electrical | M.Tech
पॉलिटेक्निक डिप्लोमा
6 महीने की स्टाईपंड के साथ इन्टर्नशिप
कम्प्यूटर साईस | सिविल | टेक्सटाइल मैकेनिकल | माईनिंग | इलेक्ट्रिकल्स
BCA | MCA | PGDCA

MANAGEMENT
BBA | B.Com *with CA
MBA- Finance | HR | Marketing
Business Anylatics | Family Business Management
MBA- Excutive | M.Com

LIBRARY SCIENCE
D.Lib | B.Lib | M.Lib

LEGAL STUDIES
Approved by BAR Council of India
BA LLB | LLB | LLM

PHARMACY
Approved by PHARMACY COUNCIL OF INDIA
B.Pharm | D.Pharm

APPLIED SCIENCE
B.Sc. (Hons.) PCM / CBZ
M.Sc.- केमिस्ट्री | फिजिक्स | मैथमेटिक्स | जूलॉजी | बॉटनी | जीयोइन्फोर्मेटिक्स

HEALTH SCIENCE
BPT (फिजियोथेरेपी)
GNM (जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी)
B.Sc Nursing

ARTS & HUMANITIES
BA | MA हिन्दी साहित्य | अंग्रेजी साहित्य भूगोल | इतिहास | राजनीतिशास्त्र | समाजशास्त्र ड्राइंग | म्यूजिक | अर्थशास्त्र | लोक प्रशासन

VOCATIONAL STUDIES
B. Voc. | Graphic & Interior

प्रवेश काय लिय **ADMISSION OPEN 2026-27** प्रवेश कार्यालय

यूनिवर्सिटी ऑफिस	सिटी आफिस भीलवाड़ा-1	सिटी आफिस भीलवाड़ा -2	आंसीद सिटी आफिस	प्रतापगढ़ सिटी आफिस	चित्तौड़गढ़ सिटी आफिस	गंगापुर सिटी आफिस
+91 78910 50000 NH-48, Bhilwara Chittor Bypass Bhilwara (Raj.)	+91 7891050004 Gol Pyau Chouraha, Bhilwara	+91 90010 97346 1st Floor, Above ICICI Bank, S.K. Plaza, Pur Road, Bhilwara (Raj.)	+91 90010 97343 Panchayat Samiti Road, Chungi Naka, Asind (Raj.)	+91 82095 70594 Neemach Naka, Pandit Deendayal Market, Pratapgarh	+91 90010 97348 Arjun plaza, A-13/2 Bapu Nagar Senthi, Near HDFC bank, Chittorgarh (Raj.)	+91 90010 97359 Opp. Bus Stand, Gangapur

सम्पादकीय मण्डल

प्रधान संपादक
घीसूसिंह चुण्डावत

संपादक
कमलेश सिंह चुण्डावत

सलाहकार मण्डल

जोगाराम कुमावत (केबीनेट मंत्री)
मदन दिलावर (शिक्षा मंत्री)
गोवर्धनभाई पुरोहित
श्री शम्भुसिंह चौहान
मदन सिंह चौहान
उदयसिंह राजपूत
भूपेन्द्र कुमार प्रजापति
जती भगाबाबा महाराज
नारायणसिंह खुडाला

बिजनेस हेड

भवानी सिंह राजपुरोहित (अहमदाबाद)
राकेश गुप्ता (जयपुर)
अमित कुमार चेचानी
मो. 9099111111
प्रमोद परिहार (सूरत)

एडिटोरियल कंसल्टेंट

राव जागृति सिंह
पुखराज सीरवी, नारलाई

विधि सलाहकार

शीतलप्रसाद राव जयपुर, मांगीलाल सीरवी जयपुर, गणेश बोराणा शिवगंज

डेस्क - दीपक कुमार

डिजाइन - कृपाल सिंह राणावत, शाहिद खान, हंसराज मीणा

डिस्ट्रीब्यूटर -
विनोद बुक एजेन्सी,
खानपुर, अहमदाबाद।
सूरत बुक स्टॉल, भागल, सूरत,
राजस्थान राव पब्लिेशन, जयपुर

राजस्थान दर्शन में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनमें संस्थापक-प्रकाशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा।

पत्रिका में प्रकाशित किए गए लेखों में फोटो फाइल फोटो है

राजस्थान की आवाज...

राजस्थान दर्शन

राजस्थान । गुजरात । महाराष्ट्र से प्रसारित

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 13। अंक : 12 । जयपुर, जून 2026 । मूल्य 45/-रुपए प्रति । वार्षिक शुल्क 540/-रुपए प्रति । पृ.सं. 40

5

28

- : सम्पादकीय कार्यालय : -

ए-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर फोन.: 0141-2521000
E-mail : rajasthandarshanpatrika@gmail.com Website: www.rajasthandarshanpatrika.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी राव संजयसिंह की ओर से मुद्रक नागर प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, वर्क्स-A/F26, औद्योगिक क्षेत्र, करतारपुरा विस्तार, करतारपुरा, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं A-11, प्रथम मंजिल करधनी शॉपिंग सेन्टर,हरिमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 से प्रकाशित।
सम्पादक कमलेशसिंह चुण्डावत, एच-6, नंदपुरी कॉलोनी, मालवीय नगर,जयपुर-17
(पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)

सम्पर्क : 9166693566, 9413840652, 9588246740

संपादकीय...

वैश्विक ऊर्जा संकट पर प्रधानमंत्री मोदी की चेतावनी : दुनिया को समय रहते संभलना होगा

दुनिया आज जिस दौर से गुजर रही है, उसमें ऊर्जा केवल विकास का साधन नहीं रह गई है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा का सबसे बड़ा आधार बन चुकी है। पेट्रोलियम, गैस, कोयला और बिजली की बढ़ती मांग ने दुनिया के सामने एक गंभीर ऊर्जा संकट खड़ा कर दिया है। ऐसे समय में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक मंचों पर ऊर्जा संकट को लेकर जो चेतावनी दी है, वह केवल भारत के लिए नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए महत्वपूर्ण संदेश है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट कहा है कि यदि दुनिया ने समय रहते टिकाऊ और संतुलित ऊर्जा व्यवस्था की ओर कदम नहीं बढ़ाए, तो आने वाले वर्षों में आर्थिक अस्थिरता, महंगाई और भू-राजनीतिक तनाव और अधिक बढ़ सकते हैं। आज विश्व के अधिकांश देश ऊर्जा के लिए सीमित संसाधनों पर निर्भर हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद यह संकट और गहरा गया। यूरोप जैसे विकसित देशों में गैस और बिजली की भारी कमी देखने को मिली। कई देशों में उद्योग बंद होने की नौबत आ गई, जबकि आम जनता को महंगे ईंधन और बढ़े हुए बिजली बिलों का सामना करना पड़ा। इस स्थिति ने यह साबित कर दिया कि ऊर्जा सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की स्थिरता के लिए कितनी आवश्यक है।

प्रधानमंत्री मोदी लगातार इस बात पर जोर देते रहे हैं कि दुनिया को 'वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड' जैसी सोच अपनानी होगी। उनका मानना है कि यदि विभिन्न देश सौर ऊर्जा और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग करें, तो ऊर्जा संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है। भारत ने पिछले कुछ वर्षों में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे क्षेत्रों में तेज गति से काम किया है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) इसका बड़ा उदाहरण है, जिसकी पहल भारत ने ही की थी। आज अनेक देश इस अभियान से जुड़ चुके हैं। ऊर्जा संकट का सबसे बड़ा असर विकासशील देशों पर पड़ रहा है। गरीब और मध्यम वर्ग के लिए महंगा ईंधन जीवन को और कठिन बना देता है। परिवहन महंगा होता है, खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ती हैं और उद्योगों की लागत में वृद्धि होती है। इसका सीधा असर रोजगार और आर्थिक विकास पर पड़ता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार कहा है कि ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुकी है। भारत इसी दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना, एथेनॉल मिश्रण, सोलर मिशन और घरेलू गैस कनेक्शन जैसी योजनाएं इसी सोच का हिस्सा हैं। हालांकि केवल सरकारों के प्रयास पर्याप्त नहीं होंगे। दुनिया को अपनी ऊर्जा खपत की आदतों में भी बदलाव लाना होगा। आज भी बड़ी मात्रा में ऊर्जा का अनावश्यक उपयोग होता है। विकसित देशों में अत्यधिक उपभोग और विकासशील देशों में संसाधनों की कमी के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। यदि दुनिया ने पारंपरिक ईंधनों पर निर्भरता कम नहीं की, तो जलवायु परिवर्तन का संकट भी और गंभीर होगा। बढ़ता तापमान, सूखा, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाएं ऊर्जा संकट को और जटिल बना सकती हैं। भारत ने जी-20 और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमेशा 'सतत विकास' की बात की है। प्रधानमंत्री मोदी का संदेश स्पष्ट है कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना ही भविष्य का रास्ता है। भारत जैसे देश, जहां ऊर्जा की मांग तेजी से बढ़ रही है, यदि नवीकरणीय ऊर्जा को प्राथमिकता देते हैं, तो दुनिया के लिए यह प्रेरणा बन सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दुनिया ऊर्जा को केवल व्यापार या राजनीति का हथियार न बनाए। कई बार वैश्विक शक्तियां तेल और गैस के संसाधनों का उपयोग दबाव बनाने के लिए करती हैं, जिससे गरीब देशों को सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ता है। प्रधानमंत्री मोदी ने इसी संदर्भ में ऊर्जा के लोकतंत्रीकरण की बात कही है। उनका मानना है कि ऊर्जा संसाधनों तक हर देश की समान पहुंच होनी चाहिए। वैश्विक ऊर्जा संकट केवल आर्थिक चुनौती नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है। यदि दुनिया अभी नहीं जागी, तो आने वाले वर्षों में स्थिति और गंभीर हो सकती है। ऊर्जा की बढ़ती कीमतें सामाजिक असंतोष और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दे सकती हैं। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी की चेतावनी को केवल एक राजनीतिक बयान मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भारत ने यह दिखाया है कि सीमित संसाधनों के बावजूद इच्छाशक्ति और दूरदृष्टि के बल पर ऊर्जा क्षेत्र में परिवर्तन संभव है। अब जरूरत है कि पूरी दुनिया सामूहिक प्रयास करे। स्वच्छ ऊर्जा, तकनीकी सहयोग और जिम्मेदार उपभोग ही इस संकट से बाहर निकलने का रास्ता है। अंततः, ऊर्जा संकट हमें यह संदेश देता है कि प्रकृति के संसाधन असीमित नहीं हैं। यदि मानवता ने संतुलन और जिम्मेदारी नहीं सीखी, तो विकास की रफ्तार स्वयं विनाश का कारण बन सकती है। प्रधानमंत्री मोदी की चेतावनी इसी भविष्य के प्रति सावधान करने वाली आवाज है, जिसे दुनिया को गंभीरता से सुनना चाहिए।

आपका-

प्रधान संपादक-घीसू सिंह चुण्डावत

वैश्विक ऊर्जा संकट

तबाही आने वाली है? वैश्विक संकट के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने दुनिया को चेताया

दुनिया में चल रहे युद्धों के बीच प्रधानमंत्री मोदी वर्तमान दशक को लगातार बढ़ती आपदाओं का दौर बताया है। उन्होंने कहा कि अगर आने वाले कुछ समय में इन परिस्थितियों को नहीं बदला गया, तो पिछले कई दशकों की मेहनत और उपलब्धियां नष्ट हो जाएंगी। इसके साथ ही दुनिया की एक बहुत बड़ी आबादी दोबारा से गरीबी के दल-दल में भी फंस सकती है। पांच देशों के दौरे के दूसरे चरण में नीदरलैंड्स पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय मूल के लोगों से बात करते हुए वैश्विक संकट पर बात की। उन्होंने कहा, 'यह दशक मानवता के लिए चुनौतियों का दशक रहा है। पहले कोरोना महामारी आई और फिर युद्ध शुरू हो गए। तब से लेकर अब तक दुनिया लगातार तेल संकट से जूझ रही है। धीरे-धीरे यह दशक दुनिया के लिए आपदाओं का दशक बनता जा रहा है।' पीएम ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए एक बड़ी आबादी के ऊपर मंडराते हुए खतरे को लेकर बात की। उन्होंने कहा, 'हम सभी देख सकते हैं कि यदि इन परिस्थितियों को जल्दी ही नहीं बदला गया, तो पिछले कई दशकों की उपलब्धियां नष्ट हो सकती है। दुनिया की एक बड़ी आबादी फिर से गरीबी के दल दल में फंस सकती है।' बता दें, पहले यूक्रेन और रूस संघर्ष और उसके बाद ईरान और अमेरिका संघर्ष से दुनिया लगातार संकटों का सामना कर रही है। लगभग 40 दिनों के युद्ध के बाद ईरान में शांति है, लेकिन होर्मुज पर अभी भी ईरानी ताला लटका हुआ है। दुनिया की तेल सप्लाई के बंद होने से वैश्विक ऊर्जा संकट गहरा गया है। परेशानी की बात यह है कि अमेरिका और ईरान दोनों ही इस युद्ध में जीतने का दावा कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में होर्मुज का खुलना अभी संभव नजर नहीं आता है।

ऊर्जा संकट के बीच पीएम मोदी की लोगों से अपील

एक लंबे दौर तक ऊर्जा संकट का सामना करने के मई के पहले हफ्ते में सरकार ने भी लोगों से ऊर्जा और कम खर्च करने की अपील की। हैदराबाद के एक कार्यक्रम में लोगों से अपील करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों से घर से काम करने और जहां तक संभव हो विदेश यात्राएं न करने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने ईंधन बचत और विदेशी मुद्रा की बचत को देशभक्ति के काम से भी जोड़ा।

सोना कम खरीदें

हम भारतीयों के अंदर सोने को लेकर गजब का उत्साह देखा जाता है। लेकिन उत्पादन और खपत का आँकड़ा देखें तो हम काफी पीछे होते जाते हैं। भारत हर साल अरबों डॉलर का सोना आयात करता है। इसकी वजह से विदेशी मुद्रा भंडार पर इसका दबाव पड़ता है। इसी दबाव को कम करने के लिए पीएम मोदी अपील की कि अगले एक साल तक चाहे कोई भी कार्यक्रम हो लेकिन सोना नहीं खरीदना है। पीएम की इस अपील के बाद सरकार ने सोने के आयात पर ड्यूटी बढ़ा दी है।

तेल और ऊर्जा बचाएं

सोने के साथ-साथ भारत अपनी जरूरत का अधिकांश तेल और गैस बाहर से आयात करता है। ऐसी स्थिति में हमारा ज्यादातर विदेशी मुद्रा भंडार इसी की भेंट चढ़ जाता है। पीएम मोदी ने विदेशी मुद्रा भंडार को बचाने और ऊर्जा संकट से बचने के लिए लोगों से सार्वजनिक परिवहन, कारपूलिंग, इलेक्ट्रिक वाहनों के ज्यादा से ज्यादा उपयोग और घर से काम करने पर जोर दिया। पीएम मोदी हैदराबाद के कार्यक्रम में कोविड महामारी के समय को याद करते हुए कहा कि उस दौरान घर से काम करना सामान्य हो गया था। ऐसे में अब एक बार फिर से लोगों को वही दिनचर्या अपनाने में परेशानी नहीं होगी। इसके बाद भारतीय तेल कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल के दामों में तीन-तीन रुपए की बढ़ोतरी कर दी। बाद में सीएनजी के दामों में भी एक रुपए की बढ़ोतरी देखने को मिली।

विदेशी यात्राओं को रोकें

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीयों द्वारा की जाने वाली विदेश यात्राओं को भी रोकने की अपील की। उन्होंने जोर दिया कि भारत में ही बहुत सारी सुंदर और बेहतरीन जगह हैं। ऐसे में लोगों को विदेशी यात्राओं के पहले भारत में ही घूमना शुरू करना चाहिए। इससे भारत के विदेशी मुद्रा भंडार पर बुरा असर नहीं पड़ेगा। लगातार विदेशी मुद्रा बचाने का प्रयास कर रही सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए पीएम मोदी ने कहा, 'हमें विदेशी मुद्रा बचाने और युद्ध संकटों के दुष्प्रभाव कम करने के लिए केवल उतना ही उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए जितनी आवश्यकता हो।' बता दें, ऊर्जा संकट के फेर में फंसी दुनिया अभी इससे बाहर निकलती हुई नजर नहीं आ रही है। अमेरिका और ईरान के बीच में अभी तक कोई समझौता नहीं हो पाया है। दूसरी तरफ अमेरिका की तरफ से लगातार इस बात के संकेत दिए जा रहे हैं कि वह एक बार फिर से ईरान पर हमला कर सकता है। दूसरी तरफ ईरान भी पीछे हटने के विचार में नहीं है। तेहरान की तरफ से साफ कर दिया गया है कि अगर अमेरिका और इजरायल हमला करते हैं, तो इस बार पलटवार और भी ज्यादा भयानक होगा। अगर इन दोनों पक्षों के बीच में युद्ध फिर से शुरू होता है, तो होर्मुज के बंद होने के साथ-साथ खाड़ी देशों के ऊर्जा संयंत्रों पर भी असर पड़ेगा। यह युद्ध ईरान और अमेरिका के अलावा पूरी दुनिया के लिए खतरे की घंटी साबित होगा।

वैश्विक ऊर्जा संकट

40 देशों में ईंधन राशनिंग और वर्क फ्रॉम होम लागू

अमेरिका-ईरान और इस्राइल युद्ध के चलते ऊर्जा संसाधनों में कमी और बढ़ती कीमतों से निपटने के लिए कम से कम 40 देशों ने कड़ी नीतियां लागू की हैं। इनमें ईंधन राशनिंग यानी ईंधन का संयम से इस्तेमाल, वाहनों की आवाजाही घटाने, सरकारी यात्राएं सीमित करने, वर्क फ्रॉम होम जैसे उपाय लागू किए हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईएई) के इमरजेंसी एनर्जी कंजर्वेशन (आपातकालीन ऊर्जा संरक्षण) ट्रैकर के अनुसार, यूरोपीय आयोग समेत इन देशों ने ऊर्जा संकट से निपटने के लिए निजी और सरकारी वाहनों का उपयोग सीमित करने, एक दिन छोड़कर गाड़ी चलाना, सार्वजनिक परिवहन और कारपूलिंग को बढ़ावा दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील का मुख्य उद्देश्य भी स्वैच्छिक संयम से बड़े संकट को टालना है। नागरिकों से यात्राएं घटाने या ऊर्जा बचाने को कहने का मतलब सिर्फ आर्थिक बचत करना नहीं है, बल्कि देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना भी है। पीएम की अपील भी इन वैश्विक उपायों के परिप्रेक्ष्य में ही दिख रहा है।

3 देशों ने खाना पकाने के तेल/एलपीजी खपत कम करने के प्रत्यक्ष उपाय लागू किए

18 देशों ने परिवहन सीमित करने, ईंधन राशनिंग परिवहन/कार पूलिंग जैसे कदम उठाए

35 से अधिक देशों ने कूलिंग लाइटिंग की सीमाएं तय कीं, सरकारी यात्राओं पर पाबंदी लगाई।

निजी क्षेत्र भी आवागमन कम करने को दे रहे बढ़ावा, कई जगह कार्यालय बंद

पीएम नरेंद्र मोदी की भी ऊर्जा बचत की अपील का मुख्य उद्देश्य संयम से संकट को टालना ही है।

भारत दुनिया का तीसरा बड़ा स्टार्टअप

आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम वाला देश बन चुका है। मोदी ने कहा कि भारत की आकांक्षाएं अब अपनी सीमाओं तक सीमित नहीं हैं। भारत ओलंपिक की मेजबानी करना चाहता है, वैश्विक विनिर्माण हब बनना चाहता है, ग्रीन एनर्जी लीडर बनना चाहता है और दुनिया का ग्रोथ इंजन बनना चाहता है। इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भारत ने अभूतपूर्व प्रयास शुरू किए हैं, रिकार्ड गति से हाईवे निर्माण रेलवे का अभूतपूर्व विद्युतीकरण किया गया है, वंदे भारत जैसी सेमी-हाईस्पीड ट्रेनें, दुनिया का सबसे बड़ा नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार कर रहा है। बड़े से बड़ा लक्ष्य हो, भारत उसे पाकर ही रहेगा।

पीएम मोदी का बयान

पीएम मोदी का यह बयान तब आया है जब भारत समेत कई देश ऊर्जा संकट का सामना कर रहे हैं। हाल ही में विश्व बैंक व आइएमएफ सरीकी संस्थानों ने भी कहा है कि यूक्रेन संकट व उसके बाद ईरान-अमेरिका-इजरायल के बीच युद्ध का विपरीत असर पूरी दुनिया पर होगा, लेकिन विकासशील देशों पर सबसे ज्यादा होगा। कुछ अन्य एजेंसियों ने भी कहा है कि विकासशील देशों में गरीबी घटाने, स्वास्थ्य और शिक्षा सुधारने तथा आर्थिक विकास के जो बड़े-बड़े कदम उठाए गए थे, वे सब उलटे पड़ सकते हैं इसके साथ ही पीएम मोदी ने भारत-नीदरलैंड साझेदारी को नई दिशा देते हुए कहा कि दोनों देश मिलकर विश्वसनीय, पारदर्शी व भविष्य के लिए तैयार आपूर्ति श्रृंखला बना रहे हैं। दोनों देश ऊर्जा सुरक्षा से लेकर जल सुरक्षा जैसे क्षेत्र में काफी करीबी तौर पर काम कर रहे हैं। भारत और यूरोपीय संघ के बीच हाल में हुआ ऐतिहासिक व्यापार समझौता इस साझेदारी को और मजबूत बनाएगा। उन्होंने कहा कि, 'दुनिया का कोई भी देश हो, अगर उसे आगे बढ़ना है तो उसे बड़े सपने देखने ही होंगे।' भारत भी बड़े सपने देख रहा है। देश अब सिर्फ बदलाव नहीं चाहता बल्कि सबसे बेहेतर और तेजी से बदलाव चाहता है। भारत की युवा पीढ़ी आसमान छूने को तैयार है। वे स्टार्टअप शुरू कर रहे हैं, गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बना रहे हैं, ड्रोन, एआई और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत को विश्व पटल पर आगे ले जा रहे हैं।

घर से काम को बढ़ावा

कई देशों ने सरकारी कर्मचारियों के लिए घर से काम करने को प्रोत्साहित या अनिवार्य किया है। निजी क्षेत्र में भी आवागमन कम करने को बढ़ावा दे रहे हैं। पाकिस्तान (4 दिन का कार्य सप्ताह और 50% घर से काम), इंडोनेशिया (शुक्रवार को घर से काम), श्रीलंका (बुधवार को कार्यालय बंद), कोरिया (लचीली व्यवस्थाएं)। कंबोडिया, लाओ पीडीआर, मलयेशिया, फिलीपीन, थाईलैंड, वियतनाम, पेरू, मिस्र भी ऐसे उपाय अपना रहे हैं।

कूलिंग और एसी पर तापमान सीमित

बिजली बचाने के लिए कार्यालयों और सार्वजनिक भवनों में तापमान सीमाएं निर्धारित करना। बांग्लादेश व सिंगापुर (25 डिग्री से, पंखों को प्राथमिकता), कंबोडिया (24-25 डिग्री से.), मलेशिया (24 डिग्री से.), श्रीलंका व थाईलैंड (26 डिग्री से), जॉर्डन (सार्वजनिक कार्यालयों में एसी पर प्रतिबंध)।

सरकारी यात्रा प्रतिबंधित

आधिकारिक हवाई व सड़क यात्रा और अंतरराष्ट्रीय यात्राएं सीमित की गईं। जॉर्डन (अस्थायी प्रतिबंध), पाकिस्तान (विदेश यात्रा पर प्रतिबंध), मिस्र, इंडोनेशिया, मलेशिया, कोरिया (सार्वजनिक क्षेत्र के लिए विषम-सम प्रणाली), पनामा, तंजानिया (सामूहिक बस यात्रा)।

ऑनलाइन कक्षाएं

बंद किए गए या सप्ताह छोटा किया गया, या ऑनलाइन कक्षाएं। बांग्लादेश (विवि बंद), श्रीलंका (बुधवार को छुट्टी), लाओ पीडीआर (कार्य सप्ताह तीन दिन का), पाकिस्तान (पूरी तरह ऑनलाइन)।

ऊर्जा आपातकाल

मेडागास्कर (15 दिन), मार्शल द्वीप समूह (90 दिन), तुवालू (एक द्वीप पर 2 सप्ताह), फिलीपींस और श्रीलंका में राष्ट्रीय ऊर्जा आपातकाल।

परिवहन और ईंधन संबंधी उपाय

कोरिया (विषम-सम ड्राइविंग), श्रीलंका (क्यूआर कोड राशनिंग), म्यांमार (वैकल्पिक दिवस+इलेक्ट्रिक वाहन एक्सचेंज), बांग्लादेश (ईंधन सीमा तय), पाकिस्तान (मुफ्त सार्वजनिक परिवहन, गति सीमा तय), इंडोनेशिया (बायोडीजल+इलेक्ट्रिक वाहन प्रोत्साहन)।

13 देशों ने वर्क फ्रॉम होम सार्वजनिक क्षेत्र में दूरस्थ कार्य व्यवस्था को बढ़ावा दिया

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के कारण दुनिया भर में ऊर्जा संकट गहरा गया है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी आईईए के अनुसार, लगभग 40 देशों ने ईंधन बचाने के लिए कड़े कदम उठाए हैं। इनमें ईंधन की राशनिंग, सरकारी यात्राओं पर पाबंदी, वर्क फ्रॉम होम और सम-विषम वाहन प्रणाली जैसे उपाय शामिल हैं। इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी भारतीयों से ऊर्जा बचाने की अपील की है, जिसका उद्देश्य देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना है।

डीजल-पेट्रोल के बढ़े दाम से बॉर्डर पार हाहाकार! नेपाल-पकिस्तान में 'आग' लगा रहा तेल

ईरान पर हमले और हॉर्मुज खाड़ी बंद होने के बाद पूरी दुनिया में तेल सप्लाई चेन बुरी तरह प्रभावित हो गई। दुनिया का करीब 20 प्रतिशत कच्चा तेल इसी समुद्री रास्ते से गुजरता था। रास्ता बंद होते ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में भारी उछाल आ गया। इससे तेल की कीमतों ने मुश्किलें बढ़ा दी हैं।

पाकिस्तान में पेट्रोल-डीजल ने तोड़ी लोगों की कमर

सबसे खराब स्थिति पाकिस्तान की बताई जा रही है. वहां पिछले तीन महीनों में पेट्रोल करीब 64 प्रतिशत और डीजल 61 प्रतिशत तक महंगा हो गया है. पहले जहां लोगों को 266 रुपये चुकाने पड़ते थे, वहीं अब पेट्रोल के लिए 458.86 पाकिस्तानी रुपये और डीजल के लिए 520.42 पाकिस्तानी रुपये देने पड़ रहे हैं (पाकिस्तान के पेट्रोलियम मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में पेट्रोल में 42.7 प्रतिशत और डीजल में 54.9 प्रतिशत बढ़ोतरी का ऐलान किया, जिसके बाद देशभर में लोगों की चिंता बढ़ गई। फिलहाल वहां पेट्रोल 1.64 डॉलर और डीजल 1.86 डॉलर प्रति लीटर बिक रहा है। भारतीय मुद्रा के हिसाब से पाकिस्तान में पेट्रोल करीब 157.34 रुपये और डीजल 178.45 रुपये प्रति लीटर पड़ रहा है। स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि सरकार को बिजली और ईंधन बचाने के लिए चार दिन का वर्किंग वीक लागू करना पड़ा है। कई स्कूल भी बंद किए गए हैं।

नेपाल में दक्षिण एशिया का सबसे महंगा पेट्रोल

नेपाल की स्थिति भी काफी चिंताजनक हो गई है। नेपाल अब दक्षिण एशिया में सबसे महंगा पेट्रोल बेचने वाला देश बन चुका है। अप्रैल 2026 में वहां सिर्फ एक महीने के भीतर चार बार तेल की कीमतें बढ़ाई गईं। जनवरी में जो पेट्रोल 137 नेपाली रुपये प्रति लीटर था, वह बढ़कर 219 नेपाली रुपये तक पहुंच गया। डॉलर में इसकी कीमत 1.48 डॉलर प्रति लीटर है, जबकि भारतीय रुपये में यह करीब 123.58 रुपये प्रति लीटर बैठती है। नेपाल पूरी तरह आयातित तेल पर निर्भर है। वहां परिवहन क्षेत्र में करीब 60 प्रतिशत तेल की खपत होती है। ऐसे में पेट्रोल-डीजल महंगा होने से माल ढुलाई के खर्च में भारी बढ़ोतरी हुई और रोजमर्रा की चीजों के दाम भी तेजी से बढ़ गए हैं।

श्रीलंका में ईंधन राशनिंग तक की नौबत

श्रीलंका में भी हालात सामान्य नहीं हैं। मार्च 2026 में वहां एशिया की सबसे बड़ी ईंधन मूल्य वृद्धि में से एक दर्ज की गई। ऑटो डीजल की कीमतों में 26.1 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई और भाव 303 रुपये से बढ़कर 382 रुपये प्रति लीटर पहुंच गए। पेट्रोल की कीमत भी बढ़कर 398 श्रीलंकाई रुपये प्रति लीटर हो गई, जो भारतीय मुद्रा में करीब 108.55 रुपये प्रति लीटर बैठती है। स्थिति इतनी खराब हो गई कि श्रीलंका में ईंधन राशनिंग लागू करनी पड़ी। यानी लोग अपनी जरूरत के हिसाब से खुलकर तेल नहीं खरीद पा रहे हैं। सरकार ने स्कूलों और सार्वजनिक कार्यक्रमों पर भी पाबंदियां लगाई हैं, ताकि तेल की खपत कम की जा सके और अर्थव्यवस्था को संभाला जा सके।

बांग्लादेश में भी बढ़ा दबाव

बांग्लादेश ने शुरुआत में तेल की बढ़ती कीमतों का बोझ जनता पर नहीं डालने की कोशिश की, लेकिन लगातार बढ़ती सब्सिडी के कारण सरकार को आखिरकार कीमतें बढ़ानी पड़ीं। अप्रैल 2026 में वहां पेट्रोल और डीजल की कीमतों में 10 से 16 प्रतिशत तक बढ़ोतरी की गई। ईरान युद्ध से पहले कच्चा तेल 70 से 75 डॉलर प्रति बैरल के आसपास था, लेकिन युद्ध के बाद इसकी कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गई। बांग्लादेश अपनी जरूरत का लगभग 95 प्रतिशत तेल आयात करता है. हालात ऐसे हैं कि कई जिलों में पेट्रोल पंप खाली हो चुके हैं और लोगों को घंटों लाइन में लगना पड़ रहा है।

भारत में सीमित बढ़ोतरी, सरकार ने संभाला मोर्चा : इन सबके बीच भारत की स्थिति अपेक्षाकृत काफी स्थिर नजर आ रही है। 15 मई 2026 तक भारत में पेट्रोल की कीमत में केवल 3.14 रुपये प्रति लीटर यानी करीब 3.4 प्रतिशत और डीजल में 3.11 रुपये प्रति लीटर यानी लगभग 3.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। जहां पड़ोसी देशों में तेल की कीमतें 60 प्रतिशत तक बढ़ गईं, वहीं भारत में यह बढ़ोतरी काफी सीमित रही। केंद्र सरकार और सरकारी तेल कंपनियों ने अंतरराष्ट्रीय बाजार के बड़े झटके का असर काफी हद तक खुद उठाया और उसे सीधे आम जनता तक नहीं पहुंचने दिया।

दुनिया पर मंडरा रहा इतिहास का सबसे बड़ा ऊर्जा संकट : IEA

भारी संकट मंडराने लगा है। ईरान युद्ध इसकी वजह है। सप्लाई और ट्रेड में व्यवधान से इसके चलते इस साल ग्लोबल ऑयल डिमांड में गिरावट आने की आशंका है। कोरोना की महामारी के बाद से यह सबसे बड़ी गिरावट होगी। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी (आईईए) ने इसे लेकर चेतावनी दी है। यह चेतावनी भारत की टेंशन को सीधे तौर पर बढ़ाएगी।

IEA ने अपनी ताजा रिपोर्ट में क्या कहा ? : एजेंसी ने अपनी ताजा ऑयल मार्केट रिपोर्ट में कई बड़ी बातें कही हैं। उसके मुताबिक, ईरान युद्ध के कारण ग्लोबल आउटलुक में बड़े बदलाव आए हैं। इन बदलावों से तेल की मांग में इस साल 80 किलो बैरल रोजाना की गिरावट आने की आशंका है। यह पिछले महीने की रिपोर्ट से 730 किलो बैरल प्रतिदिन (यानी 7,30,000 बैरल रोजाना) कम है। 2026 की दूसरी तिमाही में 1.5mb/d (मिलियन बैरल प्रतिदिन) की गिरावट का अनुमान है। कोरोना के कारण ईंधन की खपत में आई भारी कमी के बाद से यह सबसे बड़ी गिरावट होगी।

आंकड़े कर रहे हैं संकट की ओर इशारा : रिपोर्ट में कहा गया है कि मार्च में ग्लोबल ऑयल सप्लाई 1.01 करोड़ बैरल प्रतिदिन घटकर 97 लाख बैरल प्रतिदिन रह गई। इसे इतिहास का सबसे बड़ा व्यवधान बताया गया है। यह गिरावट पश्चिम एशिया में एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर पर लगातार हमलों और होर्मुज स्ट्रेट से टैंकरों की आवाजाही पर प्रतिबंधों के कारण हुई। इस दौरान ओपेक+ देशों का उत्पादन तेजी से गिरा। वहीं, व्यवधानों के कारण गैर-ओपेक+ देशों की सप्लाई में भी गिरावट आई।

कच्चे तेल की कमी और बुनियादी ढांचे को हुए नुकसान के कारण क्रूड के उत्पादन में गिरावट आई है। इससे रिफाइनिंग गतिविधियों पर भी असर पड़ा है। पश्चिम एशिया और एशिया की रिफाइनरियों ने उत्पादन में भारी कटौती की है। इससे ग्लोबल प्रोडक्ट मार्केट में मांग बढ़ी है। मार्जिन में इजाफा हुआ है।

ग्लोबल ऑयल रिजर्व में गिरावट : इसी बीच, मार्च में ग्लोबल तेल भंडार में 8.5 करोड़ बैरल की गिरावट आई। पश्चिम एशिया के बाहर भारी कमी देखी गई। जबकि निर्यात मार्गों के अवरुद्ध होने के कारण इस क्षेत्र में फ्लोटिंग स्टोरेज में इजाफा हुआ। सप्लाई में आई इस बाधा के जवाब में तेल की कीमतों में उछाल आया। मार्च में अब तक की सबसे बड़ी मासिक बढ़ोतरी दर्ज की गई। एजेंसी ने बताया कि बेंचमार्क क्रूड की कीमतें बढ़कर लगभग 130 डॉलर प्रति बैरल हो गईं। यह संघर्ष से पहले के स्तरों से कहीं अधिक है। वहीं, रिफाइनरों की ओर से सप्लाई सुरक्षित करने के प्रयासों के कारण फिजिकल क्रूड की कीमतें थोड़े समय के लिए 150 डॉलर के करीब पहुंच गईं। एजेंसी ने आगे कहा कि रिफाइंड प्रोडक्ट्स में और भी तेज बढ़ोतरी देखी गई। यह सप्लाई में गंभीर बाधाओं को दिखाता है।

केंद्र में है होर्मुज स्ट्रेट : होर्मुज स्ट्रेट से होकर जहाजों के आवागमन में आई बाधा इस संकट की मुख्य वजह रही है। अप्रैल की शुरुआत में इस महत्वपूर्ण जलमार्ग से होकर निकलने वाले जहाजों का ट्रैफिक तेजी से गिरा। इससे शिपमेंट संघर्ष के पहले के स्तरों के एक हिस्से तक गिर गया।

युद्ध काल में ऊर्जा संकट

हरित ऊर्जा की ओर मजबूर दुनिया, लेकिन रास्ता कठिन

युद्धकालीन ऊर्जा संकट ने तेल-गैस पर निर्भरता की सीमाएं उजागर कर दी हैं

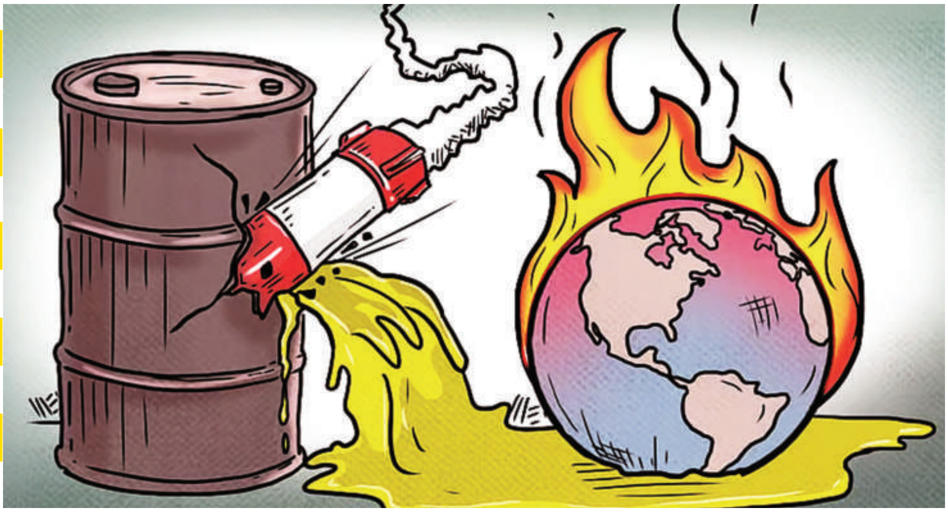

अमेरिका और इजरायल ने ईरान के विरुद्ध जो विनाशकारी युद्ध छेड़ा उसने दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति में उथल-पुथल मचा दी है। अमीर और गरीब दोनों तरह के मुल्क अपने नागरिकों को चेतावनी दे रहे हैं कि मुश्किल समय आने वाला है। ऐसा संकट जो शायद इस पीढ़ी ने तो नहीं झेला यानी ऊर्जा (ईंधन) की भारी कमी और राशनिंग। यहां तक कि कारों और विमानों के भी ईंधन खत्म हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। सवाल यह है कि भविष्य में ऊर्जा क्षेत्र का मानचित्र कैसा होगा? जिस समय मैं यह सवाल कर रही हूं, तब तक हजारों जान जा चुकी हैं और हम अपनी टीवी स्क्रीन्स पर निरर्थक विनाश को साफ देख सकते हैं। हमें इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। हमें इस ऊर्जा व्यवधान के कारण दुनिया में हो रही दिक्कतों को भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। कई देशों में खाना पकाने के ईंधन खासतौर पर तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) की कमी हो रही है। आम परिवार किसी कीमत पर गैस पाने के लिए अपनी आय का बड़ा हिस्सा खर्च कर दे रहे हैं। गैस एजेंसियों व पेट्रोल पंप पर लंबी कतारें फिर से आम हो रही हैं। इससे लागत बढ़ रही है जिसे लोग मुश्किल से वहन कर पा रहे हैं।

अधिकांश देशों में, खासकर हमारे क्षेत्र में ईंधन आयात व्यापार घाटे पर सबसे बड़ा बोझ है और इस परिदृश्य में बढ़ती तेल कीमतें अर्थव्यवस्था को पंगु बना देने की हद तक असर डाल सकती हैं। इसके अलावा, वैश्विक उर्वरक आपूर्ति में आसन्न कमी से किसानों को कड़ी चोट पहुंचने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। यह वे किसान हैं जो पहले से ही जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसम और विकृत वैश्विक खाद्य कीमतों से जूझ रहे हैं।

यहां यह सवाल आता है कि ऊर्जा क्षेत्र को लगे इस झटके का क्या असर होगा? युद्ध की शुरुआत के पहले भी दुनिया ऊर्जा में बदलाव के दौर से गुजर रही थी। चरणबद्ध तरीके से कोयले का स्थान नवीकरणीय ऊर्जा ले रही थी। वाहनों में बिजली, पेट्रोल और डीजल की जगह ले रही थी। अंतरराष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी की मार्च 2026 की रिपोर्ट के मुताबिक, 2025 के आखिर तक नवीकरणीय ऊर्जा दुनिया की कुल स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता के 50 फीसदी के करीब है। साल के दौरान जो नया बिजली उत्पादन शामिल हुआ, उसका 85 फीसदी नवीकरणीय ऊर्जा से आया। मुख्य रूप से सौर और पवन ऊर्जा से उत्पादन हुआ है। दिलचस्प बात यह है कि यह ऊर्जा परिवर्तन केवल चीन या यूरोप में नहीं हो रहा था, जहां इसके होने की उम्मीद थी। हाल ही में थिंक टैंक एम्बर द्वारा 74 सबसे जलवायु-संवेदनशील देशों के गठबंधन के साथ मिलकर जारी की गई एक रिपोर्ट में पाया गया कि ये देश इलेक्ट्रो-टेक को तेजी से अपना रहे हैं, जलवायु परिवर्तन के कारण नहीं बल्कि इसलिए कि यह तेज, सस्ता और अधिक विश्वसनीय है। ये निम्न और मध्यम आय वाले देश ईंधन आयातक हैं और उनके लिए ऊर्जा संकट वास्तविक है यानी 70 करोड़ से अधिक लोगों के पास अभी भी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए विश्वसनीय ऊर्जा नहीं है। इसका मतलब यह भी है कि वे अभी तक ग्रिड से जुड़े नहीं हैं और इसलिए वे वैकल्पिक ऊर्जा प्रणाली को तेजी से और बड़े पैमाने पर अपना सकते हैं। सौर पैनलों, बैटरियों और इलेक्ट्रिक वाहनों की लागत अब किफायती हो गई है और चीन से आयात उनके लिए उपयोगी है। ये देश जीवाश्म ईंधन को दरकिनार कर सकते हैं और नवीकरणीय ऊर्जा को तीव्र गति से अपना सकते हैं। रिपोर्ट में पाया गया है कि नामीबिया और टोगो जैसे देश सौर उत्पादन में अग्रणी हैं, जॉर्डन और किर्गिजस्तान बैटरी बिक्री में और नेपाल व श्रीलंका ईवी अपनाने में आगे हैं। नेपाल और श्रीलंका में लगभग 70 फीसदी नए वाहन इलेक्ट्रिक थे।

वर्तमान व्यवधान ने ऊर्जा आयात की लागत बढ़ा दी है और देशों को ऊर्जा सुरक्षा की आवश्यकता का एहसास कराया है। पहले से ही तेल और गैस के बाजारों पर कब्जा करने की नई होड़ शुरू हो गई है। नाइजीरिया, गुयाना, रूस और निश्चित रूप से अमेरिका से ऊर्जा प्राप्त की जाएगी। यह देशों को अपने संसाधनों यानी कोयला से लेकर लकड़ी के कोयले तक का अधिक उपयोग करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जबकि दोनों ही प्रदूषक हैं। लेकिन यह जीवाश्म ईंधन से दूर जाने की गति को भी तेज कर सकता है, क्योंकि अब आयातित सौर पैनल और बैटरियां उपलब्ध हैं।

यह सब ऊर्जा के भविष्य को नया रूप देगा। वर्तमान तेल और गैस संकट केवल अल्पकालिक नहीं है। होर्मुज स्ट्रेट के बंद होने से वैश्विक प्रवाह का लगभग 20 फीसदी बाधित हुआ है और भले ही यह फिर से खुले, क्षेत्र में उत्पादन सुविधाओं को हुए नुकसान की मरम्मत में समय लगेगा। इसका अर्थ यह हो सकता है कि सस्ते और प्रचुर जीवाश्म ईंधन का समय अब समाप्त हो गया है।

ऊर्जा की लागत ही आर्थिक वृद्धि की लागत है और इस बदले हुए परिदृश्य का अर्थ होगा ऊर्जा सुरक्षा के लिए नई योजनाओं पर काम करना। हरित तकनीक की राष्ट्रीय विनिर्माण क्षमता भी इसकी वाहक होगी जिसमें सौर और बिजली से चलने वाले वाहन शामिल होंगे। इसके अलावा यह भी अहम होगा कि ऊर्जा सुरक्षा से संबंधित आपूर्ति श्रृंखला के लिए क्या बेहतर होगा।

ईरान जंग की वजह पैदा हुआ ऊर्जा संकट, तमाम देश खोज रहे विकल्प

ईरान जंग के कारण वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र में आए संकट से अफ्रीका और एशिया के कुछ देश नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं। तमाम देश अब परमाणु ऊर्जा उत्पादन के बारे में भी विचार कर रहे हैं। अब इन दोनों महाद्वीपों के उन देशों में भी परमाणु ऊर्जा की योजनाएं तेजी पकड़ रही हैं जिनके पास अभी तक यह ऊर्जा नहीं है। जंग की वजह से सबसे अधिक एशिया महाद्वीप प्रभावित हुआ है। मध्य पूर्व के अधिकांश तेल और प्राकृतिक गैस की खपत इसी महाद्वीप में थी। जंग की वजह से अफ्रीका भी इसकी चपेट में आया है। इसके अलावा अमेरिका और यूरोप भी संकट की मार झेल रहे हैं।

परमाणु ऊर्जा से निकलेगा हल?

अब जब ऊर्जा संकट बढ़ा है तो जिन अफ्रीकी और एशियाई देशों के पास परमाणु संयंत्र हैं वो अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ा रहे हैं। ऐसा इस वजह से किया जा रहा है ताकि अल्पकालिक ऊर्जा आपूर्ति की कमी को पूरा किया जा सके। जिन देशों के पास अभी परमाणु ऊर्जा नहीं है वो भविष्य में ऐसे संकट से बचने के लिए दीर्घकालिक परमाणु ऊर्जा योजनाओं पर तेजी से काम कर रहे हैं।

भविष्य पर है नजर

वैसे देखा जाए तो परमाणु ऊर्जा मौजूदा संकट का कोई त्वरित समाधान नहीं है। परमाणु ऊर्जा विकसित करने में दशकों लग सकते हैं, खासकर उन देशों के लिए जो इस क्षेत्र में नए हैं। लेकिन, 'काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस' के जोशुआ कर्लांट्जिक का कहना है कि परमाणु ऊर्जा के प्रति आज की गई दीर्घकालिक प्लानिंग, भविष्य में इन देशों की समग्र ऊर्जा व्यवस्था का एक स्थायी हिस्सा बन जाएंगी।

क्या कर रहे हैं एशियाई और अफ्रीकी देश?

ईरान जंग के चलते दक्षिण कोरिया परमाणु ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, जबकि ताइवान अपने उन परमाणु रिएक्टरों को फिर से चालू करने पर विचार कर रहा है जिन्हें पहले बंद कर दिया गया था। अफ्रीका में भी, भविष्य में परमाणु रिएक्टर बनाने की योजनाओं को अब और भी अधिक प्राथमिकता दी जा रही है। केन्या, रवांडा और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों ने इस दिशा में अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त किया है।

'तेज हुई परमाणु पुनर्जागरण की प्रक्रिया' : बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स की रचेल ब्रॉन्सन का कहना है कि इस जंग ने वैश्विक स्तर पर एक परमाणु पुनर्जागरण की प्रक्रिया को तेज कर दिया है। अब विभिन्न देश जीवाश्म ईंधन बाजारों से जुड़े जोखिमों से मुक्ति पाने के लिए नए विकल्पों की तलाश में हैं। अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, वर्तमान में 31 देश परमाणु ऊर्जा का उपयोग कर रहे हैं, जिससे वैश्विक बिजली की कुल मांग का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा पूरा होता है। एजेंसी का यह भी कहना है कि 40 अन्य देश या तो इस तकनीक को अपनाने पर विचार कर रहे हैं या फिर परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने की तैयारियों में जुटे हैं।

अमेरिका और रूस में बढ़ी होड़

ऊर्जा क्षेत्र में बदलाव ऐसे समय में आ रहे हैं जब अफ्रीका में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए वाशिंगटन और मॉस्को के बीच मुकाबला तेज हो रहा है। रूस की रोसाटॉम मिस्र का पहला रिएक्टर बना रही है और उसके इथियोपिया, बुर्किना फासो, घाना, तंजानिया और नाइजर के साथ सहयोग समझौते हैं, जिनमें बड़े प्रोजेक्ट्स, अनुसंधान केंद्र, यूरेनियम प्रोसेसिंग सुविधाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। इससे इतर केवल केन्या और घाना ही अमेरिका के नेतृत्व वाली मॉड्यूलर रिएक्टर पहल में शामिल हुए हैं, लेकिन वाशिंगटन भी इस दौड़ में आगे निकलने की कोशिश कर रहा है। अमेरिका और दक्षिण कोरिया ने हाल ही में नैरोबी में एक न्यूक्लियर सम्मेलन आयोजित किया था। अमेरिकी विदेश विभाग के रयान टौगर ने कहा है कि वाशिंगटन अफ्रीकी देशों के साथ मिलकर सुरक्षित नागरिक न्यूक्लियर रिएक्टरों को तेजी से विकसित करने पर काम कर रहा है।

न्यूक्लियर एनर्जी और जोखिम

न्यूक्लियर एनर्जी न्यूक्लियर बम बनाने की दिशा में भी एक कदम हो सकती है। एडवोकेसी ग्रुप 'फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ जापान' की अयुमी फुकाकुसा ने कहा कि न्यूक्लियर एनर्जी बहुत रिस्की है और यह देशों को एनरिच्ड यूरेनियम जैसे इम्पोर्टेड फ्यूल पर निर्भर बनाए रखेगी। ग्लोबल रिन्यूएबल्स अलायंस के रेक्स अमानसियो ने कहा कि यह देखते हुए कि न्यूक्लियर सेक्टर को डेवलप होने में कई साल लगते हैं, सरकारों को लंबे समय की एनर्जी सिक्योरिटी के लिए रिन्यूएबल एनर्जी के विस्तार पर फोकस करना चाहिए। एटॉमिक साइंटिस्ट ग्रुप की ब्रॉन्सन ने कहा कि संघर्षों के दौरान न्यूक्लियर प्लांट खतरे में रहते हैं।

दुनिया में आसमान छू रहे थे कच्चे तेल के दाम, तब भारत में सरकार ने एक्साइज ड्यूटी घटाकर रोकी महंगाई

पूरी दुनिया जब रूस-यूक्रेन युद्ध और होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे बड़े संकटों से जूझ रही थी, तब भारत सरकार ने अपने नागरिकों को पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों से बचाने के लिए एक बहुत ही बड़ा और अहम कदम उठाया। मंगलवार को जारी हुई एक नई रिपोर्ट 'पेट्रोल और डीजल: उपभोक्ता संरक्षण की संरचना' में यह दावा किया गया कि भारत दुनिया की इकलौती ऐसी बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसने दो बड़े वैश्विक ऊर्जा संकटों के दौरान तेल के दाम बढ़ाने के बजाय उनमें कटौती की। इस रिपोर्ट में साफ बताया गया है कि सरकार ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें आसमान छूने के बावजूद इसका सीधा बोझ आम जनता पर नहीं पड़ने दिया, बल्कि खुद राजस्व (टैक्स के पैसे) का भारी नुकसान उठाया।

रिपोर्ट के मुताबिक, नवंबर 2021 से लेकर मार्च 2026 तक भारत सरकार ने पेट्रोल पर कुल 27 रुपए और डीजल पर 30 रुपए तक की बड़ी राहत दी है। इसमें सबसे हालिया कटौती 27 मार्च 2026 को हुई थी, जब स्पेशल एडिशनल एक्साइज ड्यूटी (एसएईडी) को घटाकर पेट्रोल और डीजल दोनों पर सीधे 10-10 रुपए प्रति लीटर की राहत दी गई। इस पूरी अवधि के दौरान जब दुनिया के कई देशों में तेल की कीमतें 10 से 90 प्रतिशत तक बढ़ गई थीं, तब भारत ने लगभग 12 हफ्तों तक अपने यहां कीमतों को पूरी तरह से स्थिर रखा। सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों ने भारी नुकसान सहकर आम उपभोक्ताओं को महंगाई की मार से बचाया।

सरकार ने कब-कब दी पेट्रोल-डीजल की कीमतों में राहत?

रिपोर्ट में इस बात का पूरा ब्योरा दिया गया है कि सरकार ने अलग-अलग समय पर कैसे लोगों को राहत पहुंचाई। शुरुआत 4 नवंबर 2021 को हुई थी जब पेट्रोल पर 5 रुपए और डीजल पर 10 रुपए कम किए गए थे। इसके बाद 21 मई 2022 को पेट्रोल 8 रुपए और डीजल 6 रुपए सस्ता किया गया। 14 मार्च 2024 और अप्रैल 2025 में भी तेल कंपनियों ने दोनों ईंधनों पर 2-2 रुपए की कटौती की। इसके बाद 27 मार्च 2026 को एसएईडी घटाकर 10-10 रुपए की बड़ी राहत दी गई। हालांकि, हाल ही में 15 मई और 19 मई को पश्चिमी एशिया के संकट के कारण दामों में थोड़ी बढ़ोतरी जरूर करनी पड़ी है।

कांग्रेस के 'ओवर टैक्सेशन' के आरोपों का रिपोर्ट ने क्या जवाब दिया?

इस रिपोर्ट में कांग्रेस पार्टी के अधिक टैक्स वसूली (ओवर टैक्सेशन) वाले पुराने आरोपों का भी करारा जवाब दिया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि यूपीए सरकार के समय तेल कंपनियों को राहत देने के लिए 'ऑयल बॉन्ड' जारी किए गए थे। इन बॉन्ड्स का सारा बोझ बाद में आने वाली सरकारों और भविष्य की पीढ़ियों के कंधों पर डाल दिया गया था। इसके ठीक विपरीत, मौजूदा सरकार ने सीधे अपनी एक्साइज ड्यूटी (उत्पाद शुल्क) घटाकर लोगों को राहत दी। इससे उपभोक्ताओं को तुरंत फायदा मिला और भविष्य के लिए कोई अतिरिक्त कर्ज या बोझ नहीं छोड़ा गया।

राज्यों में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में अंतर क्यों दिखाई देता है?

रिपोर्ट में यह बात भी साफ की गई है कि पूरे देश में पेट्रोल-डीजल पर केंद्र सरकार का टैक्स (एक्साइज ड्यूटी) बिल्कुल एक समान है। इसके बावजूद अलग-अलग राज्यों में कीमतों में बड़ा अंतर इसलिए है क्योंकि हर राज्य सरकार अपना अलग 'वैट' (VAT) लगाती है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और केरल जैसे गैर-भाजपा शासित राज्यों में वैट बहुत ज्यादा है, इसलिए वहां पेट्रोल 107 रुपए प्रति लीटर से भी ऊपर बिक रहा है। वहीं, उत्तर प्रदेश, गुजरात और असम जैसे राज्यों में कीमतें कम हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि केंद्र द्वारा टैक्स घटाने के बावजूद कई विपक्ष शासित राज्यों ने अपना वैट कम नहीं किया।

'बेटी आंगन की फुलवारी' के तहत साप्ताहिक जन सेवा कार्यक्रम का आयोजन

-कुंवर सूरज प्रताप सिंह जी ठि. गढ़ी रावला, बांसवाड़ा

उदयपुर, सुश्री तारिणी सिंह सुपोत्री ठा.टीकम सिंह श्रीमती चंदा कंवर सुपुत्री कुंवर सूरज प्रताप सिंह श्रीमती नीलम सिंह सागवाड़िया बांसवाड़ा के 3 मई को 6 वें जन्मोत्सव पर साप्ताहिक जनसेवा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। संयोजक राव संजय सिंह सिंदरली ने बताया कि बेटी आंगन की फुलवारी के तहत सामाजिक जन सेवा कार्यक्रम का आयोजन प्रतिवर्ष की भांति किया जा रहा है। जिससे समाज में बेटियों के जन्म पर समाज में जन चेतना का जागरण हो सके। आयोजक परिवार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की भावनाओं को लेकर कार्यक्रम का आयोजन कर रहे हैं। कार्यक्रम के तहत

शहीद लेफ्टिनेंट अभिनव नागोरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भुवाणा उदयपुर में बेटी आंगन की फुलवारी कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

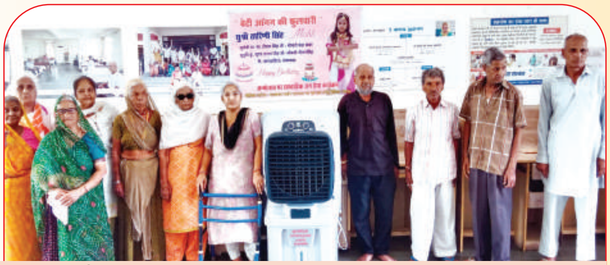

1 मई को वृद्धा आश्रम में भोजन प्रसादी एवं कूलर भेट

2 मई को फल वितरण गौ सेवा, साप्ताहिक शीतल जल सेवा उद्घाटन

3 मई अपना घर संस्थान में भोजन प्रसादी एवं अंग वस्त्र वितरण

5 मई राजकीय विद्यालय में चप्पल वितरण एवं स्टेशनरी वितरण कार्यक्रम

6मई राजकीय विद्यालय में सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ।

7 मई बालिकाओं के लिए द वीट कंप्यूटर एजुकेशन के सहयोग से निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण का आयोजन

शहीद अभिनव नागोरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कमरे का जिर्णोद्धार कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर। बेटी आंगन की फुलवारी कार्यक्रम के फाउंडर राव सूरज सिंह गढी रावला, बांसवाड़ा ने सह परिवार शहिद अभिनव नागोरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भुवाणा उदयपुर में बालिकाओं के लिए कमरे का जीर्णोद्धार कार्यक्रम आयोजित किया। सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। नींव का पूजन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जिला परिषद सदस्य पिंकी मंडावत, कर्नल गुमान सिंह आसोलिया, दशरथ सिंह दलावत से.नि. प्रधानाचार्य, कार्यक्रम के संयोजक राव संजय सिंह सिंदरली, प्रधानाचार्य मनीष सोनी संपूर्ण स्टाफ गण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कर्नल गुमानसिंह , दशरथ सिंह ने बच्चों को ओजस्वी वाणी में प्रोत्साहित किया। विद्यालय परिवार द्वारा पधारे सभी अतिथियों का स्वागत सम्मान हुआ। तारिणी बाईसा के जन्म दिवस के उपलक्ष में विद्यार्थियों के लिए भोजन प्रसादी का आयोजन हुआ। बेटी आंगन की फुलवारी कार्यक्रम के तहत साप्ताहिक जन सेवा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी की रिपोर्ट

दुनिया का तीसरा सबसे तेज बिजली उत्पादन करने वाला देश बना भारत

इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी (IEA) की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक भारत पिछले पांच वर्षों में बिजली उत्पादन क्षमता में सबसे तेज वृद्धि दर्ज करने वाले देशों में तीसरे स्थान पर रहा है। वहीं भारत से आगे सिर्फ चीन और अमेरिका हैं। IEA ने कहा कि भारत में बिजली की मांग लगातार बढ़ रही है, जिसकी वजह है शहरी और ग्रामीण इलाकों में तेजी से निर्माण, घरों में एयर कंडीशनर और अन्य उपकरणों का बढ़ता उपयोग, और औद्योगिक क्षेत्रों की ऊर्जा जरूरतें हैं। इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए देश ने सभी ऊर्जा स्रोतों से बिजली उत्पादन में तेजी से विस्तार किया है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि इस विकास का प्रमुख कारण रिन्यूएबल एनर्जी (अक्षय ऊर्जा) पर दिया गया जोर है। खासकर सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारी निवेश देखने को मिला है। पिछले पांच वर्षों में भारत में गैर-जीवाश्म ईंधन (Non-Fossil Fuel) में हुए कुल निवेश का आधे से अधिक हिस्सा सिर्फ सौर ऊर्जा परियोजनाओं में हुआ। वहीं 2024 में देश के बिजली क्षेत्र में कुल निवेश का 83% हिस्सा स्वच्छ ऊर्जा (Clean Energy) परियोजनाओं में गया। इसके साथ ही, भारत 2024 में स्वच्छ ऊर्जा के लिए डेवलपमेंट फाइनेंस इंस्टिट्यूशंस (DFI) से सबसे ज्यादा वित्तीय सहायता पाने वाला देश बना। भारत को इस क्षेत्र में लगभग 2.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर की परियोजना-आधारित फंडिंग मिली।

इसके अलावा, भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। 2023 में बिजली क्षेत्र में FDI 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया, जो COVID-19 महामारी से पहले के स्तर से लगभग दोगुना है। गौरतलब है कि यह वृद्धि सरकार की 100 फीसदी FDI नीति के कारण संभव हो पाई है, जो परमाणु ऊर्जा को छोड़कर बाकी सभी बिजली उत्पादन और ट्रांसमिशन क्षेत्रों में लागू होती है।

हालांकि रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि पिछले दो वर्षों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) में गिरावट आई है, जिसका कारण वैश्विक आर्थिक स्थिति और ऊर्जा क्षेत्र की कुछ चुनौतियां हैं। फिर भी, दीर्घकालिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र निवेश के लिए सकारात्मक बना हुआ है। IEA की इस रिपोर्ट से साफ है कि भारत न केवल बिजली उत्पादन में तेजी से आगे बढ़ रहा है, बल्कि साफ और नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने में भी दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो चुका है।-

17 पंचगनी : पाँच हरी-भरी पहाड़ियाँ...
19 शिलांग : पूर्व का स्कॉटलैंड, पेलिंग, माजुली,
18 मुक्तेश्वर, गंगटोक, तवांग, दार्जिलिंग
20 चंदौली राष्ट्रीय उद्यान, मालशेज घाट, महाबलेश्वर, लोनावाला, माथेरान

पर्यटन

चिलचिलाती गर्मी से बचने के लिए भारत में घूमने के लिए अच्छी जगहें

पंचगनी : पाँच हरी-भरी पहाड़ियाँ

हर गर्मियों में कई पर्यटकों को आकर्षित करने वाला, पंचगनी मुंबईकरों और पुणे के लोगों के लिए एक लोकप्रिय सप्ताहांत अवकाश स्थल है। यह भारत की ठंडी जगहों में से एक है। पंचगनी खूबसूरती से पांच हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जिसने इसे इसका नाम दिया। हिल स्टेशन की प्राकृतिक सुंदरता और सुहावना मौसम इसे गर्मियों के दौरान एक लोकप्रिय गंतव्य बनाता है।

आग का बड़ा गोला, हमारा अपना सूर्य अपनी पूरी शक्ति पर है। गर्मी से बचने का मैदानी इलाकों से दूर कुछ राहत पाने से बेहतर तरीका क्या हो सकता है। शुक्र है, भारत में पहाड़ों, पहाड़ियों, समुद्र तटों, विदेशी जंगलों और गर्मियों में घूमने के लिए अन्य स्थान हैं जो चिलचिलाती गर्मी से कुछ राहत प्रदान करते हैं। भारत में गर्मी अप्रैल के महीने में शुरू होती है और जून के अंत तक जारी रहती है। जो लोग भारत में इन गर्मियों की छुट्टियों के दौरान अपने दोस्तों और परिवार के साथ आराम करना चाहते हैं और कुछ यादें बटोरना चाहते हैं, उनके लिए भारत में कुछ अद्भुत ठंडी जगहें हैं। इन पर्वतीय क्षेत्रों के अलावा, गर्मियों में भारत में घूमने के लिए अच्छी जगहें कुछ अन्य ठंडी जगहें भी हैं।

यहां गर्मियों में भारत में घूमने की जगहें की सूची दी गई है। भारत में छुट्टियों की योजना बनाने से पहले सूची पर एक नज़र डालें और एक दिल छू लेने वाले अनुभव के लिए उन्हें अपनी बकेट लिस्ट में शामिल करें। आश्चर्य की बात यह है कि वे सिर्फ एक क्षेत्र में नहीं बल्कि पूरे भारत में फैले हुए हैं। यह हिल स्टेशनों, शहरों और कस्बों का एक सर्वोच्च संग्रह है जिसे आप चिलचिलाती गर्मियों में बिना पसीना बहाए देख सकते हैं।

मुक्तेश्वरः साहसिक स्थान

एक विचित्र हिल स्टेशन, मुक्तेश्वर में शांति, अद्भुत दृश्य और साल भर सुखद मौसम रहता है। भारत में गर्मियों की छुट्टियों के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक, यह हिल स्टेशन हरे-भरे जंगल, साहसिक ट्रैकिंग ट्रेल्स और ताज़ी और ठंडी हिमालय की ठंडक का दावा करता है। दिल्ली के नजदीक, पहाड़ों से प्यार करने वालों के लिए यह एक समय सप्ताहांत विश्राम स्थल है। यह संभवतः गर्मियों के लिए भारत के सबसे भव्य पर्यटन स्थलों में से एक है। काठगोदाम रेलवे स्टेशन मुक्तेश्वर से निकटतम है। हिल स्टेशन से केवल 100 किमी दूर पंतनगर हवाई अड्डा निकटतम है।

गंगटोक : एक अनोखा हिल-स्टेशन

गंगटोक एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहां बार-बार आना आम बात नहीं है, गंगटोक आपकी उत्तर पूर्व यात्रा के दौरान मई और जून में भारत में घूमने के लिए सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। सिक्किम की राजधानी बादलों से घिरी हुई है और हरी-भरी वनस्पतियों, गहन घाटियों और कंचनजंगा की सुरम्य पृष्ठभूमि से घिरी हुई है।

पहुँचने के लिए कैसे करें : निकटतम हवाई अड्डा दिल्ली बागडोगरा 124 किमी दूर है। निकटतम रेलवे स्टेशन 148 किमी दूर सिलीगुड़ी में न्यू जलपाईगुड़ी है,

समय अवधि: 3-4 दिन

तवांग : बौद्ध मठों के लिए

तवांग का परिदृश्य विशाल चट्टानी लेकिन हरे-भरे पहाड़ों, बौद्ध मठों के समूह और मोनपा बस्तियों की जातीयता से सुशोभित है। 17वीं सदी का इसका प्रतिष्ठित मठ हमेशा दिल चुराने में माहिर रहा है। गर्मजोशी भरा आतिथ्य और सुखद मौसम दो प्राथमिक कारण हैं। तवांग को गर्मियों में परिवार के साथ भारत में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक माना जाता है। पहुँचने के लिए कैसे करें : तवांग से निकटतम हवाई अड्डा सलोनीबारी हवाई अड्डा है, जो 315 किमी की दूरी पर है। निकटतम रेलवे स्टेशन तेजपुर रेलवे स्टेशन है, जो 385 किमी दूर है। तवांग कोलकाता से 1404 किमी दूर है, जो तवांग से निकटतम प्रमुख शहर है। सुनिश्चित करें कि आप रास्ते में पर्याप्त मात्रा में रुकें।

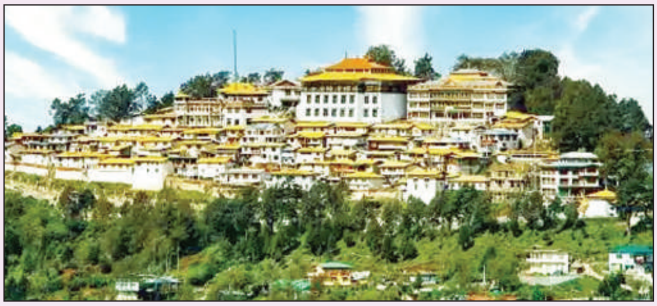

दार्जिलिंगः चाय बागान स्वर्ग

चाय बागानों का स्वर्ग, दार्जिलिंग अपने प्राकृतिक दृश्यों और चाय की मनमोहक सुगंध से प्रसन्न करता है। दार्जिलिंग की प्रकृति का सर्वोत्तम नजारा देखने के लिए सुबह-सुबह बगीचों में आराम से टहलें। आनंददायक टॉय ट्रेन की सवारी बच्चों के साथ-साथ वयस्कों के लिए भी जरूरी है, जबकि सूर्योदय के समय टाइगर हिल से कंचनजंगा चोटी का भव्य दृश्य सभी के लिए मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता है, खासकर हनीमून जोड़े के लिए। कुल मिलाकर, यह भारत में गर्मियों की छुट्टियों के लिए बेहतरीन जगहों में से एक है और इसकी असली प्राकृतिक छटा निश्चित रूप से यह साबित करती है।

शिलांग : पूर्व का स्कॉटलैंड

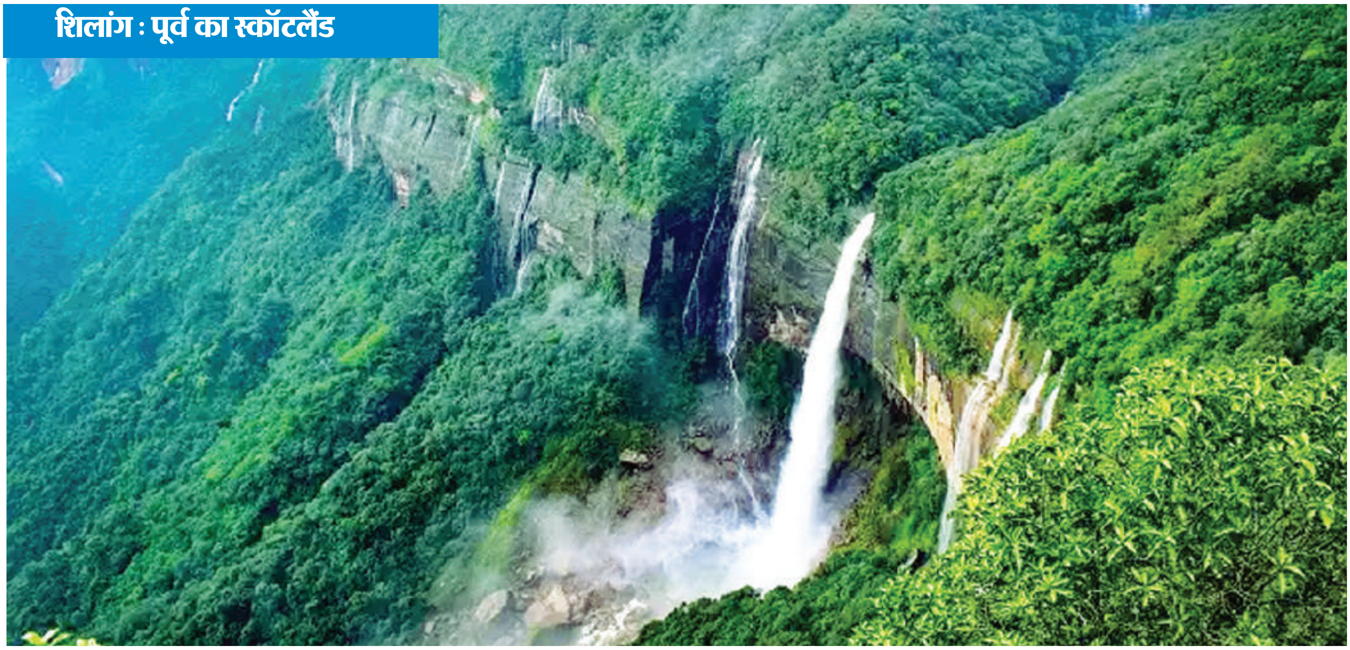

एक और उत्तर पूर्वी रत्न शिलांग है जो गर्मियों के दौरान भारत में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों पर आराम से पहुंच जाता है। शिलांग के परिदृश्य और स्विट्जरलैंड के परिदृश्य के बीच आश्चर्यजनक समानताएं हैं, और इसलिए इसे पूर्व का स्कॉटलैंड भी कहा जाता है। हिल-स्टेशन अच्छी तरह से विकसित हुआ है लेकिन औपनिवेशिक आकर्षण फीका नहीं पड़ा है!

पहुँचने के लिए कैसे करें

शिलांग का अपना हवाई अड्डा है, जिसका नाम शिलांग हवाई अड्डा है। गुवाहाटी स्टेशन शिलांग से निकटतम रेलवे स्टेशन है, जो 100 किमी की दूरी पर स्थित है। सड़क यात्रा: कोलकाता शिलांग से निकटतम महानगरीय शहर है, जो 1100 किमी दूर है।

पेलिंग : चमकदार झरनों के लिए

चाहे आप शांति चाहते हों या भीड़भाड़, पेलिंग भारत में गर्मियों में कम बजट में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। यह अल्पज्ञात उत्तर पूर्वी शहर अपने चमकदार झरनों, झीलों, मठों, बस्तियों और तत्कालीन शासकों के अवशेषों से आश्चर्यचकित करता है। वास्तव में, पेलिंग में घूमने के लिए बहुत सारी जगहें हैं, आप अपनी छुट्टियों को बढ़ाने पर विचार करेंगे।

पहुँचने के लिए कैसे करें

- दार्जिलिंग में बागडोगरा हवाई अड्डा पेलिंग से निकटतम हवाई अड्डा है। दोनों के बीच की दूरी 145 किलोमीटर है।
- पेलिंग से निकटतम रेलवे स्टेशन 140 किमी दूर न्यू जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन है।
- सड़क यात्रा : कोलकाता पेलिंग से निकटतम प्रमुख शहर है, जो 690 किमी दूर स्थित है।

माजुली : सबसे बड़ा नदी द्वीप

असम सभ्यता के उद्गम स्थल के रूप में भी जाना जाने वाला माजुली दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। ब्रह्मपुत्र के पानी के किनारे शांति से स्थित, यह संस्कृति और विरासत का एक अनूठा मिश्रण है। यदि आप पूर्वोत्तर की शांति में कहीं एक अनोखी जगह की तलाश में हैं, तो आप माजुली के साथ गलत नहीं हो सकते। इसलिए यदि आप अपनी आगामी यात्रा के लिए भारत में ग्रीष्मकालीन स्थलों की सूची बना रहे हैं, तो माजुली उसमें अवश्य होनी चाहिए।

पहुँचने के लिए कैसे करें

जोरहाट टाउन रेलवे स्टेशन 25 किमी की दूरी पर निकटतम है। रोवरियाह हवाई अड्डा निकटतम है जो 28 किमी की दूरी पर है।

समय अवधि : 2-3 दिन

चंदौली राष्ट्रीय उद्यान : समृद्ध वन्य जीवन

एक विश्व धरोहर स्थल, चंदौली राष्ट्रीय उद्यान प्रकृति-प्रेमियों के लिए एक रत्न है। बंगाल टाइगर, तेंदुआ, स्लॉथ भालू और भारतीय बाइसन ऐसे कुछ जानवर हैं जिन्हें आप यहाँ देखने की उम्मीद कर सकते हैं। वन्यजीव चंदौली राष्ट्रीय उद्यान के अलावा, पार्क में ऐतिहासिक स्थल भी हैं; जैसे प्रचितगढ़ और भैरवगढ़।

पहुँचने के लिए कैसे करें : चंदोली राष्ट्रीय उद्यान से निकटतम हवाई अड्डा कोल्हापुर में 80 किमी की दूरी पर स्थित है।

सांगली रेलवे स्टेशन चंदोली राष्ट्रीय उद्यान से निकटतम रेलवे स्टेशन है। दोनों के बीच 75 किमी का अंतर है।

सड़क यात्राः मुंबई और पुणे चंदोली राष्ट्रीय उद्यान से निकटतम प्रमुख शहर हैं। दोनों मालशेज घाट से क्रमशः 355 किमी और 215 किमी की दूरी पर हैं।

मालशेज घाटः बीहड़ खंडहर

शहतूत के बगीचे, ऊबड़-खाबड़ खंडहर और खिले हुए घास के मैदान; मालशेज घाट महाराष्ट्र का एक मनोरम स्थल है। कई प्रसिद्ध ट्रैकिंग मार्ग, जैसे शिवनेरी किले का मार्ग, यहां एक साहसिक लेकिन तरोताजा कर देने वाला अनुभव प्रदान करते हैं। यह भारत में सर्वोत्तम ग्रीष्मकालीन गंतव्य में से एक है।

पहुँचने के लिए कैसे करें : मालशेज घाट से निकटतम हवाई अड्डा 115 किमी की दूरी पर पुणे में स्थित है। कल्याण रेलवे स्टेशन, 85 किमी की दूरी पर, मालशेज घाट से निकटतम प्रमुख रेलवे स्टेशन है।

महाबलेश्वर : सदाबहार वन

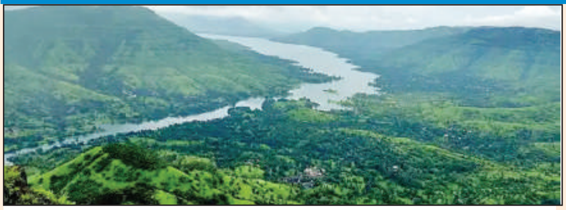

महाबलेश्वर सभी मौसमों में मुंबई से सबसे अच्छे सप्ताहांत स्थानों में से एक है। हालाँकि, यह महाराष्ट्र में गर्मियों के दौरान भारत में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। यह विचित्र हिल-स्टेशन शहर के परिसर में चिलचिलाती गर्मी और उमस से राहत प्रदान करता है। सह्याद्री पर्वत श्रृंखला में स्थित, महाबलेश्वर को देश के कुछ सदाबहार वनों में से एक माना जाता है। मंदिर, झीलें, सुविधाजनक स्थान, झरने और प्रतापगढ़ किला ट्रेक एक सुंदर छुट्टी बनाते हैं।

लोनावालाः हरी-भरी हरियाली के लिए

मुंबई से लगभग एक घंटे की ड्राइव की दूरी पर, लोनावाला भारत में सुपर-हिट ग्रीष्मकालीन अवकाश स्थलों और भारत में ठंडी जगहों में से एक है, खासकर मुंबईवासियों के लिए। आप सुंदर संपत्तियों में आराम करना या गुफाओं का पता लगाने के लिए बाहर जाना या हरे-भरे पृष्ठभूमि के साथ तस्वीरें क्लिक करना चुन सकते हैं। नीरस शहरी जीवन से बचते हुए, लोनावाला में शामिल होने के लिए असंख्य गतिविधियाँ उपलब्ध हैं।

माथेरान : ताज़ा परिदृश्य

माथेरान एक छोटा सा शहर है जो मोटर वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने के लिए जाना जाता है, माथेरान जहां तक ? ?आप देख सकते हैं हरियाली से ढका हुआ है। मुंबई से एक लोकप्रिय सप्ताहांत अवकाश, माथेरान, प्रकृति की प्रचुरता के साथ-साथ औपनिवेशिक छटाओं को भी प्रदर्शित करता है। यह अपने सुंदर मौसम और ताज़ा परिदृश्य के लिए गर्मियों के दौरान भारत में घूमने के लिए सबसे अच्छी और सस्ती जगहों की सूची में है, जो शहरी जीवन से एक बहुत जरूरी ब्रेक प्रदान करता है।

अब व्हाट्सएप पर ईपीएफओ की सेवाएं

यूपीआई से भी जल्द निकाल सकेंगे पैसे; परीक्षण का काम पूरा

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) अपने सदस्यों तक पहुंच बढ़ाने और सेवाओं को अधिक सरल बनाने के लिए व्हाट्सएप का उपयोग करने की योजना बना रहा है। सब कुछ ठीक रहा तो एक माह में इसकी शुरुआत हो जाएगी। इस पहल का उद्देश्य सदस्यों को तेज, सहज और बहुभाषी डिजिटल सेवाएं उपलब्ध कराना है, जिससे उन्हें पीएफ खातों से जुड़ी जानकारी और सुविधाएं आसानी से मिल सकें। इसके अलावा यूपीआई से पैसे निकालने के लिए परीक्षण पूरा हो चुका है।

व्हाट्सएप पर मिलेगी क्या-क्या सुविधा?

सदस्य अपने पीएफ बैलेंस की जानकारी, पिछले पांच लेन-देन, क्लेम की स्थिति और अन्य सेवाओं के लिए भी व्हाट्सएप के जरिये सूचना प्राप्त कर सकेंगे। पूरी प्रक्रिया में पहले सदस्य का मोबाइल नंबर उनके यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (यूएएन) से सत्यापित किया जाएगा, जिसके बाद उन्हें उनकी भाषा में मेन्यू विकल्प दिए जाएंगे। केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा, व्हाट्सएप के जरिये सदस्यों तक पहुंचना अधिक प्रभावी और सुविधाजनक होगा। सदस्य केवल हेलो लिखकर ईपीएफओ के सत्यापित व्हाट्सएप नंबर पर बातचीत शुरू कर सकेंगे। मंत्री ने बताया कि शिकायत निवारण प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से श्रम सुविधा 2.0 और समाधान 2.0 पोर्टल भी आरंभ किए गए हैं। तकनीकी दिक्कतें दूर की जा रहीं

श्रम मंत्री ने कहा कि यूपीआई के जरिये कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) से पैसा निकालने के लिए परीक्षण का काम पूरा हो चुका है। जल्द ही इसकी शुरुआत हो जाएगी। इससे सात करोड़ से अधिक अंशधारकों को लाभ होगा। इस प्रणाली के सुचारू कार्यान्वयन के लिए सॉफ्टवेयर संबंधी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

विश्व पर्यावरण दिवस कब और क्यों मनाया जाता है?

जीवन में पेड़-पौधे, नदियां, जंगल, जमीन, पहाड़ आदि का अहम योगदान है, इनके बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। लेकिन आज के समय में पर्यावरण प्रदूषण एक बहुत ही चिंताजनक विषय बन चुका है। विश्व के कई बड़े शहरों में तो सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। लेकिन हम अगर चाहें तो प्रकृति के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। प्रकृति के संरक्षण पर ही मानव जीवन का संरक्षण संभव है।

विश्व पर्यावरण दिवस कब और क्यों मनाया जाता है?

विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस को मनाये जाने का कारण है कि इसके द्वारा लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागरूक और सचेत किया जाता है। प्रकृति के बिना हम मानव जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, इसलिए हमें पेड़-पौधे, जंगल, नदियां, झीलें, जमीन, पहाड़ के महत्त्व को समझना चाहिए और कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे इनको नुकसान पहुंचे।

पहला विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया गया?

1972 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम (स्वीडन) में विश्व पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 119 देशों ने भाग लिया था। इसके बाद 5 जून 1974 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। तब से हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर लें ये संकल्प

- साल में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएं और उसे बचाएं।
- पेड़-पौधों के संरक्षण में सहयोग करें।
- तालाब, नदी, पोखर को प्रदूषित नही करें।
- जल का दुरुपयोग नहीं करें तथा इस्तेमाल के बाद बंद करें।
- प्लास्टिक/पॉलिथिन का उपयोग बंद करें।
- कूड़ा-कचरा को कूड़ेदान में फेकें।
- बिजली का अनावश्यक उपयोग नहीं करें।

विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का महत्व, इतिहास

विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण के लिए विश्वव्यापी जागरूकता और कार्रवाई को प्रोत्साहित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र का प्रमुख माध्यम है। यह सतत विकास लक्ष्यों के पर्यावरणीय आयामों पर प्रगति को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है। इसके अलावा, यह 100 से अधिक देशों में लाखों लोगों द्वारा मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी और पर्यावरण के लिए उनकी देखभाल और समर्थन दिखाने के लिए इसे लोकप्रिय रूप से 'पीपुल्स डे' कहा जाता है। पर्यावरण की रक्षा के तरीकों को जानना महत्वपूर्ण है, आइए विश्व पर्यावरण दिवस के उद्देश्य, विषयों और इतिहास का पता लगाएं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर चंद्र ग्रहण

इस साल विश्व पर्यावरण दिवस थोड़ा अलग होने वाला है क्योंकि हम 5 जून को चंद्र ग्रहण भी देखेंगे। चंद्र ग्रहण, विश्व पर्यावरण दिवस, और शुक्रवार, सभी 5 जून को एक साथ पड़ रहे हैं, इसे ज्योतिषीय रूप से एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना बनाते हैं। ऐसा माना जाता है कि ग्रहण अपने साथ किसी न किसी तरह की नकारात्मक ऊर्जा लेकर आता है। आपकी जन्म कुंडली में कौन सा घर सक्रिय है, इसके आधार पर चंद्र ग्रहण का अलग-अलग चंद्र राशियों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। लेकिन, आप अपनी चंद्र राशि के आधार पर एक पेड़ लगाकर ग्रहण के दुष्प्रभावों को नकार सकते हैं। साथ ही, यह ग्रहों के दुष्प्रभाव को कम करने और स्वास्थ्य, धन और समृद्धि प्राप्त करने के लिए भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने में मदद करता है।

अथर्ववेद में पृथ्वी को माता माना गया है और मनुष्य उसके पुत्रों का प्रतीक है। इतना ही नहीं वेदों में पेड़-पौधों का महत्व भी बताया गया है। पेड़ हमें प्राण वायु प्रदान करते हैं और पृथ्वी और आकाश के बीच सामंजस्य बनाए रखते हैं। वैदिक ज्योतिष के अनुसार एक व्यक्ति को पेड़ लगाने से बीमारियों, शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। शायद यही एक कारण है कि हमारे पूर्वज वृक्षों की पूजा करते हैं। टीबीएच, विश्व पर्यावरण दिवस पर एक पेड़ लगाकर न केवल हमारी धरती मां का पोषण करेगा बल्कि आपको ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव से भी बचाएगा। इसके अलावा, यह आपको ग्रहों के दोषों से छुटकारा पाने में मदद करता है और चंद्र ग्रहण पर दूसरों को पौधे के बीज लगाकर या यहां तक कि जीवन के कई पहलुओं में सुधार कर सकता है। अपनी राशि के अनुसार भाग्यशाली पौधों और पेड़ों के बारे में जानने के लिए हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषियों से सलाह लें।

विश्व पर्यावरण दिवस 2026

से कई तरीके हैं जिनसे आप आज अपना विश्व पर्यावरण दिवस मना सकते हैं, और अधिक स्वस्थ, पर्यावरण के अनुकूल आदतों के निर्माण की शुरुआत के रूप में भी उत्सव का उपयोग कर सकते हैं। आज और हर दिन विचार करने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

टिकाऊ उत्पादों पर स्विच करें: उन उत्पादों पर स्विच करने का प्रयास करें जो अधिक पर्यावरण के अनुकूल हैं, आदर्श रूप से प्लास्टिक-मुक्त या पुन: प्रयोज्य पैकेजिंग में प्राकृतिक और बायोडिग्रेडेबल सामग्री से बने हैं।

साफ-सफाई की योजना बनाएं: अपने क्षेत्र, पार्क या नदी में सफाई गतिविधि की व्यवस्था करें।

रीसाइक्लिंग के लिए प्रतिबद्धता बनाएं: यह एक बुनियादी टिप की तरह लग सकता है, लेकिन रीसायकल करने का हर संभव अवसर लें, चाहे वह कागज का टुकड़ा हो या प्लास्टिक का कंटेनर।

एक पेड़ लगाओ: इस विश्व पर्यावरण दिवस, अपने बगीचे या सोसायटी परिसर में एक पेड़ लगाओ। यह प्रदूषक गैसों को अवशोषित करने और हवा को शुद्ध करने में मदद करता है।

स्वयंसेवक: आप स्वयंसेवा कर सकते हैं क्योंकि यह पूरे समुदाय के लिए बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है। इसलिए विभिन्न गतिविधियों के लिए स्वेच्छा से अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलें जो हमें प्रकृति से फिर से जोड़ती हैं।

आइए एक साथ मिलें और इस विश्व पर्यावरण दिवस को मनाएं। यह हमारी जीवन शैली को नियंत्रित करने और प्लास्टिक के उपयोग को कम करने, अधिक पेड़ उगाने और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग करके पर्यावरण को बचाने में योगदान करने का समय है। समारोहों का हिस्सा बनें और दुनिया को स्वच्छ, हरा-भरा और उज्जवल बनाएं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2026

योग एक प्राचीन अभ्यास है जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शरीर शामिल हैं। यह मन की शांति, शांति, आत्मविश्वास और साहस देता है जिसके कारण लोग कई गतिविधियों को बेहतर तरीके से कर पाते हैं। यह अस्तित्व के हर स्तर पर सद्भाव और मिलन की स्थिति है। दुनिया भर में कई रूपों में योग का अभ्यास किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हर साल 21 जून को भारत और दुनिया भर में मनाया जाता है। योग के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए हर साल अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। लोगों के स्वास्थ्य पर इसके विभिन्न लाभों और प्रभावों को फैलाने के लिए इसे मनाया जाता है। 'योग' शब्द संस्कृत भाषा से आया है। इसका सीधा सा अर्थ है जुड़ना या जुड़ना। इसलिए यह व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा को एक करने के लिए एक महत्वपूर्ण अभ्यास है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 : इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पहली बार 21 जून 2015 को मनाया गया था। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में 27 सितंबर, 2014 को योग के बारे में एक प्रभावशाली भाषण देकर इसकी शुरुआत की थी। इस दिन के बाद 21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया गया। इस समय के बाद यह बात सामने आई कि लोग योग के फायदों को भी जानते थे, जिनमें से कुछ को देखा जा सकता है और कुछ को नहीं।

योग की उत्पत्ति भारत से हुई

पूर्व-वैदिक काल से, भारत को महर्षि पतंजलि के भारत के प्रति योगदान से परिचित कराया गया है जिसमें उन्होंने योग सूत्र में विभिन्न योग मुद्राओं और प्रथाओं का आयोजन और संकलन किया। कई वर्षों से योग भारतीय लोगों की जीवनशैली का हिस्सा बना हुआ है। यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। योग न केवल मानवता के भौतिक तत्वों से मिलकर बना है बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी व्यक्ति का उत्थान करता है। इसलिए यह ज्ञान, कर्म और भक्ति की सदा बहने वाली नदी है।

21 जून के बारे में तथ्य

21 जून एक शुभ दिन है जब हम सद्गुरुओं को श्रद्धांजलि देते हैं। यह ग्रीष्म संक्रांति का दिन भी है। इस दौरान उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर झुक जाता है या यूं कह सकते हैं कि सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर गमन करने लगता है। योग के दृष्टिकोण से, यह अवधि ध्यान शुरू करने के लिए एक संक्रमण का प्रतीक है। यह भी दिलचस्प बात है कि उत्तरी गोलार्ध में 21 जून को साल का सबसे लंबा दिन माना जाता है।

योग करने के फायदे

- योग तन और मन दोनों के लिए फायदेमंद है।
- नियमित योगाभ्यास करने से स्वास्थ्य संबंधी सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।
- योग मानसिक शांति प्रदान करता है जिससे पर्यावरण और परिवेश आनंदमय हो जाता है।
- योग शरीर में मांसपेशियों को अत्यधिक मजबूत करता है।
- योग के साथ व्यक्ति एक बढ़ी हुई श्वसन प्रक्रिया का अनुभव करता है। यह उनके शरीर में शक्ति और ऊर्जा उत्पन्न करने में भी मदद करता है।
- यह चयापचय प्रक्रिया को संतुलित करने में मदद करता है।
- सभी का प्रत्यक्ष लाभ, यह वजन कम करने में मदद करता है, शरीर को एक अच्छा आकार देता है और कार्डियो सिस्टम को भी स्वस्थ रखता है।
- इसके अलावा, इस अभूतपूर्व समय के दौरान, जब दुनिया नोवेल कोरोनावायरस के प्रभाव से जूझ रही है, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस अच्छे स्वास्थ्य के प्रवेश द्वार की तरह है। यह दुनिया को बेहतर स्वास्थ्य की ओर बदल रहा है और सभी को अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को समझने में मदद कर रहा है और योग से बेहतर कुछ नहीं है जो आपको स्वस्थ और सुरक्षित रहने में मदद करता है।

योग दुनिया भर के लोगों को एक-दूसरे से जोड़ता है

योग न केवल स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों से निपटने में मदद करता है, बल्कि यह दुनिया भर के लोगों को एक-दूसरे से जोड़ता है। यह दोनों को जोड़ता है-स्वास्थ्य की सुरक्षा और स्वास्थ्य का सतत विकास। आइए नियमित रूप से योगाभ्यास करने का निर्णय लें और वायरस की दुनिया से लड़ने के लिए अपने जीवन को स्वस्थ और मजबूत बनाएं।

प्रतिदिन योग का अभ्यास कर अपने स्वास्थ्य को बढ़ावा दें। अनुभवी और योग्य ज्योतिषी से स्वास्थ्य-आधारित भविष्यवाणियां प्राप्त करें।

उदयपुर के कालिका रिसॉर्ट उमरड़ा में मनाया गया राजस्थान दर्शन समाचार पत्र का 16वां स्थापना दिवस, प्रदेशभर के पत्रकारों का हुआ सम्मान

राजस्थान दर्शन निष्पक्ष पत्रकारिता का मजबूत मंच : कैबीनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी

राजस्थान दर्शन समाचार पत्र का 16वां स्थापना दिवस शनिवार को उदयपुर स्थित कालिका रिसॉर्ट, उमरड़ा में गरिमामय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी रहे । कार्यक्रम में प्रदेशभर से आए पत्रकारों, समाजसेवियों, जनप्रतिनिधियों और विभिन्न संगठनों से जुड़े गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही। समारोह में उत्कृष्ट पत्रकारिता करने वाले प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए पत्रकारों का सम्मान किया गया। साथ ही आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले भामाशाहों और समाजसेवियों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों के स्वागत एवं पत्रकारों के पंजीकरण के साथ हुई, जिसके बाद परिचय सत्र आयोजित किया गया। राजस्थान दर्शन परिवार की ओर से सभी अतिथियों का अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने अपने संबोधन में कहा कि राजस्थान दर्शन ने पिछले 16 वर्षों में निष्पक्ष एवं जनहितकारी पत्रकारिता की मिसाल कायम की है। उन्होंने कहा कि समाचार पत्र ने आमजन की समस्याओं को

प्रमुखता से उठाकर प्रशासन तक पहुंचाने का सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने राजस्थान दर्शन की सम्पादकीय टीम को सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र का मजबूत स्तंभ है और ऐसी सकारात्मक पत्रकारिता समाज के लिए प्रेरणादायी है।

उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने कहा कि राजस्थान दर्शन अपनी विश्वसनीयता और निष्पक्ष खबरों के लिए प्रदेशभर में अलग पहचान रखता है। उन्होंने कहा कि उनकी विधानसभा क्षेत्र में

इस तरह का भव्य आयोजन होना गौरव की बात है। सलूम्बर विधायक शांता अमृतलाल मीणा ने भी राजस्थान दर्शन परिवार को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए पत्रकारों की भूमिका को लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण बताया। भाजपा उदयपुर शहर जिलाध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़ ने कहा कि राजस्थान दर्शन ने अपनी लेखनी से जो मुकाम हासिल किया है, वह पत्रकारिता जगत में एक मिसाल है।

उन्होंने कहा कि समाचार पत्र लगातार जनसरोकारों से जुड़े मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाता रहा है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य डॉ. विवेक कटारा ने कहा कि राजस्थान दर्शन केवल खबरों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक सरोकारों से जुड़कर भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। श्री राजपूत करनी सेना मेवाड़ संभाग प्रभारी डॉ. परमवीर सिंह दुलावत बम्बोरा ने कहा कि राजस्थान दर्शन ने 16 वर्षों में जो पहचान बनाई है, वह अपने आप में इतिहास है।

उन्होंने पत्रकारों से निष्पक्ष और प्रखर लेखनी को निरंतर मजबूती देने का आह्वान किया। कार्यक्रम में भाजपा नेता कमलेश शर्मा, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी गिर्वा के ओनार सिंह सिसोदिया सहित कई जनप्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे। समारोह के अंत में प्रदेशभर से आए पत्रकारों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

कार्यक्रम की झलकियां

कार्यक्रम की झलकियां

कार्यक्रम की झलकियां

14 जून : विश्व रक्तदाता दिवस

प्रतिवर्ष वैज्ञानिक तथा चिकित्सक कार्ल लैंडस्टाईन के जन्मदिन के दिन 'विश्व रक्तदान दिवस' मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा हर साल यह 14 जून को मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों को रक्तदान करने के लिए प्रोत्साहित करना तथा रक्तदान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करना है।

शरीर विज्ञान में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक कार्ल लैंडस्टाईन की याद में पूरे विश्व में यह दिवस मनाया जाता है। 14 जून 1868 को ही महान वैज्ञानिक कार्ल लैंडस्टाईन का जन्म हुआ था, उन्होंने मानव रक्त में उपस्थित एग्ल्युटिनिन की मौजूदगी के आधार पर रक्तकणों का ए, बी और ओ समूह में वर्गीकरण किया। इस वर्गीकरण ने चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस महत्वपूर्ण खोज के लिए ही कार्ल लैंडस्टाईन को सन् 1930 में नोबल पुरस्कार दिया गया। सन् 1997 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सौ फीसदी स्वैच्छिक रक्तदान की शुरुआत की, जिसमें 124 प्रमुख देशों को शामिल कर सभी देशों से स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने की अपील की गई। इस पहल का मुख्य उद्देश्य था, कि किसी भी नागरिक को रक्त की आवश्यकता पड़ने पर उसे पैसे देकर रक्त न खरीदना पड़े और इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अब तक कई देशों ने स्वैच्छिक रक्तदान को अमलीजामा पहनाया है। हालांकि कई देशों में अब भी रक्तदान के लिए पैसों का लेनदेन होता है, जिसमें भारत भी शामिल है। लेकिन फिर भी रक्तदान को लेकर विभिन्न संस्थाओं व व्यक्तिगत स्तर पर उठाए गए कदम भारत में स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने में कारगर साबित हुए हैं।

चिकित्सा विज्ञान रक्तदान के संबंध में कहता है कि कोई भी स्वस्थ व्यक्ति जिसकी उम्र 16 से 60 साल के बीच हो, जो 45 किलोग्राम से अधिक वजन का हो और जिसे जो एचआईवी, हेपाटिटिस बी या हेपाटिटिस सी जैसी बीमारी न हुई हो, वह रक्तदान कर सकता है। रक्तदान करके हम स्वस्थ तो रहते ही है साथ ही हम किसी का जीवन बचाने में भी मदद करते हैं। अत: हर नागरिक को रक्तदान से जुड़ी सभी जानकारियां हासिल करते हुए प्रतिवर्ष रक्तदान अवश्य करना चाहिए।

32 निर्जला एकादशी 2026: तारीख, पूजा समय, कथा, अनुष्ठान और महत्व
33 निर्जला एकादशी : पौराणिक व्रत कथा

त्योंहार

निर्जला एकादशी 2026 : महिमा, व्रत और कथा

गंगा दशहरा 2026 क्या है?

निर्जला एकादशी, हिंदू धर्म में सबसे पवित्र और कठिन व्रतों में से एक है, जो भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने का एक विशेष अवसर प्रदान करता है। यह एकादशी ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाई जाती है और इसे सबसे कठिन इसलिए माना जाता है क्योंकि इस दिन बिना जल ग्रहण किए व्रत रखा जाता है। 2026 में यह पवित्र दिन और भी खास होगा, क्योंकि यह भक्तों को आत्मिक शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाता है। इस लेख में, हम निर्जला एकादशी 2026 की महिमा, व्रत विधि, कथा और इसके आध्यात्मिक महत्व को विस्तार से जानेंगे। ज्ञान की बातें पर हम आपको इस पवित्र व्रत के बारे में प्रेरणादायक और उपयोगी जानकारी प्रदान करेंगे।

निर्जला एकादशी 2026: तिथि और शुभ मुहूर्त

निर्जला एकादशी बृहस्पतिवार, जून 25, 2026 को
26वाँ जून को, पारण (व्रत तोड़ने का)
समय - 05:25 एएम से 08:13 पीएम
पारण तिथि के दिन द्वादशी समाप्त होने का समय - 10:22 पीएम
एकादशी तिथि प्रारम्भ - जून 24, 2026 को 06:12 पीएम बजे
एकादशी तिथि समाप्त - जून 25, 2026 को 08:09 पीएम बजे

निर्जला एकादशी का महत्व

निर्जला एकादशी को पांडव एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। यह व्रत सभी एकादशियों में सबसे कठिन माना जाता है, क्योंकि इसमें भक्त बिना पानी और भोजन के उपवास करते हैं। इस व्रत का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि मान्यता है कि यह एकादशी पूरे वर्ष की 24 एकादशियों के पुण्य के बराबर फल देती है। यह व्रत भगवान विष्णु के प्रति समर्पण और आत्म-संयम का प्रतीक है।

निर्जला एकादशी का आध्यात्मिक महत्व

निर्जला एकादशी का आध्यात्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। यह व्रत भक्तों को आत्म-नियंत्रण, संयम और भक्ति का अभ्यास करने का अवसर देता है। मान्यता है कि इस व्रत को करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं और भक्तों के सभी पापों का नाश होता है। यह व्रत न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आत्मिक शुद्धि और मानसिक शांति भी प्रदान करता है।

निर्जला एकादशी व्रत की विधि : निर्जला एकादशी का व्रत अत्यंत कठिन होता है, क्योंकि इसमें भक्त पूरे दिन और रात बिना पानी और भोजन के रहते हैं। नीचे दी गई विधि आपको इस व्रत को सही तरीके से करने में मदद करेगी:

- ☐ प्रात:काल स्नान: सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- ☐ संकल्प: भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर व्रत का संकल्प लें।
- ☐ पूजा: भगवान विष्णु की पूजा करें, जिसमें फूल, तुलसी, चंदन और दीप जलाएं।
- ☐ व्रत पालन: पूरे दिन और रात बिना जल और भोजन के व्रत रखें।
- ☐ पारणा: अगले दिन द्वादशी तिथि पर सूर्योदय के बाद पारणा करें।

निर्जला एकादशी : पौराणिक व्रत कथा

भीमसेन व्यासजी से कहने लगे कि हे पितामह! भ्राता युधिष्ठिर, माता कुंती, द्रोपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव आदि सब एकादशी का व्रत करने को कहते हैं, परंतु महाराज मैं उनसे कहता हूं कि भाई मैं भगवान की शक्ति पूजा आदि तो कर सकता हूं, दान भी दे सकता हूं परंतु भोजन के बिना नहीं रह सकता।

इस पर व्यासजी कहने लगे कि हे भीमसेन! यदि तुम नरक को बुरा और स्वर्ग को अच्छा समझते हो तो प्रति मास की दोनों एक ?ा ?दशियों को अन्न मत खाया करो। भीम कहने लगे कि हे पितामह! मैं तो पहले ही कह चुका हूं कि मैं भूख सहन नहीं कर सकता। यदि वर्षभर में कोई एक ही व्रत हो तो वह मैं रख सकता हूँ, क्योंकि मेरे पेट में वृक नाम वाली अग्नि है सो मैं भोजन किए बिना नहीं रह सकता। भोजन करने से वह शांत रहती है, इसलिए पूरा उपवास तो क्या एक समय भी बिना भोजन किए रहना कठिन है।

अत: आप मुझे कोई ऐसा व्रत बताइए जो वर्ष में केवल एक बार ही करना पड़े और मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो जाए। श्री व्यासजी कहने लगे कि हे पुत्र! बड़े-बड़े ऋषियों ने बहुत शास्त्र आदि बनाए हैं जिनसे बिना धन के थोड़े परिश्रम से ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। इसी प्रकार शास्त्रों में दोनों पक्षों की एका ?दशी का व्रत मुक्ति के लिए रखा जाता है।

व्यासजी के वचन सुनकर भीमसेन नरक में जाने के नाम से भयभीत हो गए और कांपकर कहने लगे कि अब क्या करूं? मास में दो व्रत तो मैं कर नहीं सकता, हां वर्ष में एक व्रत करने का प्रयत्न अवश्य कर सकता हूं। अत: वर्ष में एक दिन व्रत करने से यदि मेरी मुक्ति हो जाए तो ऐसा कोई व्रत बताइए।

यह सुनकर व्यासजी कहने लगे कि वृषभ और मिथुन की संक्रांति के बीच ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की जो एकादशी आती है, उसका नाम निर्जला है। तुम उस एकादशी का व्रत करो। इस एकादशी के व्रत में स्नान और आचमन के सिवा जल वर्जित है। आचमन में छः मासे से अधिक जल नहीं होना चाहिए अन्यथा वह मद्यपान के सदृश हो जाता है। इस दिन भोजन नहीं करना चाहिए, क्योंकि भोजन करने से व्रत नष्ट हो जाता है।

यदि एकादशी को सूर्योदय से लेकर द्वादशी के सूर्योदय तक जल ग्रहण न करे तो उसे सारी एकादशियों के व्रत का फल प्राप्त होता है। द्वादशी को सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि करके ब्राह्मणों का दान आदि देना चाहिए। इसके पश्चात भूखे और सत्पात्र ब्राह्मण को भोजन कराकर फिर आप भोजन कर लेना चाहिए। इसका फल पूरे एक वर्ष की संपूर्ण एकादशियों के बराबर होता है।

व्यासजी कहने लगे कि हे भीमसेन! यह मुझको स्वयं भगवान ने बताया है। इस एकादशी का पुण्य समस्त तीर्थों और दानों से अधिक है। केवल एक दिन मनुष्य निर्जल रहने से पापों से मुक्त हो जाता है।

जो मनुष्य निर्जला एकादशी का व्रत करते हैं उनकी मृत्यु के समय यमदूत आकर नहीं घेरते वरन भगवान के पार्षद उसे पुष्पक विमान में बिठाकर स्वर्ग को ले जाते हैं। अत: संसार में सबसे श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत है। इसलिए यत्न के साथ इस व्रत को करना चाहिए। उस दिन ? नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का उच्चारण करना चाहिए और गौदान करना चाहिए।

इस प्रकार व्यासजी की आज्ञानुसार भीमसेन ने इस व्रत को किया। इसलिए इस एकादशी को भीमसेनी या पांडव एकादशी भी कहते हैं। निर्जला व्रत करने से पूर्व भगवान से प्रार्थना करें कि हे भगवन! आज मैं निर्जला व्रत करता हूं, दूसरे दिन भोजन करूंगा। मैं इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करूंगा, अत: आपकी कृपा से मेरे सब पाप नष्ट हो जाएं। इस दिन जल से भरा हुआ एक घड़ा वस्त्र से ढंक कर स्वर्ण सहित दान करना चाहिए।

जो मनुष्य इस व्रत को करते हैं उनको करोड़ पल सोने के दान का फल मिलता है और जो इस दिन यज्ञादिक करते हैं उनका फल तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता। इस एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को प्राप्त होता है। जो मनुष्य इस दिन अन्न खाते हैं, ?वे चांडाल के समान हैं। वे अंत में नरक में जाते हैं। जिसने निर्जला एकादशी का व्रत किया है वह चाहे ब्रह्म हत्यारा हो, मद्यपान करता हो, चोरी की हो या गुरु के साथ द्वेष किया हो मगर इस व्रत के प्रभाव से स्वर्ग जाता है।

हे कुंतीपुत्र! जो पुरुष या स्त्री श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करते हैं उन्हें अग्रलिखित कर्म करने चाहिए। प्रथम भगवान का पूजन, फिर गौदान, ब्राह्मणों को मिष्ठान्न व दक्षिणा देनी चाहिए तथा जल से भरे कलश का दान अवश्य करना चाहिए। निर्जला के दिन अन्न, वस्त्र, उपाहन (जूती) आदि का दान भी करना चाहिए।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इस कथा को पढ़ते या सुनते हैं, उन्हें निश्चय ही स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

संगम विश्वविद्यालय : प्रबंधन शिक्षा में उत्कृष्टता और रोजगारपरकता का नया आयाम

राजस्थान के शिक्षा जगत में संगम विश्वविद्यालय निरंतर उत्कृष्टता और नवाचार का प्रतीक बनकर उभर रहा है। विश्वविद्यालय का प्रबंधन संकाय आज एक ऐसे अग्रणी विभाग के रूप में स्थापित हो चुका है, जहाँ शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, कौशल एवं नेतृत्व क्षमता के समग्र विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। संगम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. करुणेश सक्सेना देशभर में प्रबंधन शिक्षा के अग्रणी विशेषज्ञों में गिने जाते हैं। उन्होंने भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विभिन्न समितियों एवं निकायों में अपनी विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) दिशा-निर्देशों तथा पीएच.डी. विनियम-2022 जैसी महत्वपूर्ण नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता, शोध एवं नवाचार की दिशा में नई उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है।

प्रबंधन संकाय में प्रबंधन एवं वाणिज्य क्षेत्र के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। प्रमुख रूप से बीबीए, बी.कॉम, एमबीए ,एमबीए एग्जीक्यूटिव, एम.कॉम तथा विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) जैसे पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। विभाग का उद्देश्य केवल उपाधि प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को उद्योग जगत की आवश्यकताओं के अनुरूप कुशल, आत्मनिर्भर एवं नेतृत्वक्षम बनाना है।

विभाग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ सभी विषयों का अध्यापन एवं शोध कार्य अनुभवी एवं विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा कराया जाता है। सभी संकाय सदस्य विद्यावाचस्पति उपाधिधारी हैं तथा शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप सभी कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान, कौशल विकास एवं रोजगारपरक दक्षताओं का विकास हो सके।

नवप्रवर्तन एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को लगभग चार करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है। इस सहायता से विश्वविद्यालय में एक विशेष नवउद्यमिता प्रकोष्ठ संचालित किया जा रहा है, जहाँ विद्यार्थियों को नवाचार एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में मार्गदर्शन एवं आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। इससे अनेक विद्यार्थी आत्मनिर्भरता एवं उद्यम स्थापना की दिशा में प्रेरित हो रहे हैं। विद्यार्थियों की उपलब्धियों की बात करें तो प्रबंधन संकाय के व्यवसाय प्रशासन स्नातक कार्यक्रम के कई विद्यार्थियों का चयन देश के प्रतिष्ठित भारतीय प्रबंधन संस्थानों में हुआ है। वहीं वाणिज्य स्नातक के अनेक

विद्यार्थियों ने सनदी लेखाकार बनने का सपना साकार किया है। विश्वविद्यालय का प्रबंधन संकाय राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित संस्थाओं जैसे अखिल भारतीय प्रबंधन संघ, भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान तथा राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान के साथ समझौता ज्ञापन के माध्यम से जुड़ा हुआ है। इन सहयोगों के माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को नवीनतम औद्योगिक एवं व्यावसायिक कौशल सीखने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

शोध के क्षेत्र में भी विभाग निरंतर नई उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है। विभाग के संकाय सदस्यों को भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद दिल्ली से विभिन्न शोध परियोजनाएँ प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय सम्मेलनों के सफल आयोजन एवं विद्यार्थियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुतीकरण में उत्कृष्ट योगदान हेतु विभाग को दो बार इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 'द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

आज सगम विश्वविद्यालय का प्रबंधन संकाय शिक्षा, शोध, नवाचार एवं नेतृत्व निर्माण के क्षेत्र में निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर रहा है। यह संस्थान विद्यार्थियों को केवल सफल करियर ही नहीं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए भी प्रेरित कर रहा है।

गर्मियों में पपीता और तरबूज से निखारें अपनी रंगत : शहनाज हुसैन

गर्मियों में त्वचा को स्वस्थ्य और चमकदार बनाने के लिए प्राकृतिक फल आपके सहायक हो सकते हैं जोकि त्वचा को हाईड्रेट करने के साथ साथ अन्दर से पौषण प्रदान करके प्राकृतिक निखार देने में मदद करते है /

फ्रूट फेसिअल ताजे फलों में मौजूद एंजाइमों , विटामिनों और एंटी ऑक्सीडेंट्स से पोषण प्रदान करके त्वचा को भीतर और बाहर दोनों ओर से आकर्षक और तरोताजा बनाता है/ फ्रूट फेसिअल सबसे आसान केमिकल युक्त प्रक्रिया है जिसे घर में अपनी सुविधा अनुसार किया जा सकता है/ फ्रूट फेसिअल खुद की देखभाल का किफायती और प्राकृतिक तरीका है जोकि हर प्रकार की त्वचा के लिए सुरक्षित और प्रभावी है।

पपीता फेस पैक

एक कटोरी में पके हुए पपीते की कुछ स्लागइस को मैश कर लें। इसके बाद आप इस मैश किए हुए पपीते में 1 चम्मच चंदन पाउडर डालकर दोनों को अच्छे से मिलाएं। अब आप इस मिश्रण में 1 या 2 चम्मच ताजा एलोवेरा जेल और आवश्यमकता अनुसार गुलाबजल डाल कर अच्छे से मिला कर गाढ़ा पेस्ट तैयार कर लें / इस पैक को चेहरे और गर्दन पर अच्छे तरीके से लगा कर आधा घण्टा बाद गुनगुने पानी से धो डालें / इस मास्क को नियमित रूप से लगाने से आपकी त्वेचा में चमक आएगी और आपकी त्वगचा मुलायम होगी।

एक कटोरी में दो चम्मच के बराबर पपीता मैश करके इसमें 2 चम्मच दही, 1 चम्मच शहद और 1 चम्मच चावल का आटा मिला लें / सभी चीजों को अच्छे से मिला कर स्मूथ पेस्ट तैयार कर लें / इस पेस्ट को चेहरे पर लगा कर प्राकृतिक रूप से सूखने दें / जब यह पूरी तरह सुख जाये तो चेहरे को ताजे साफ पानी से धो

डालें /इस फेस पैक को आप सप्ताह में दो तीन बार उपयोग कर सकते हैं /

आधा कप मैश किया हुआ पपीता लेकर उसमें 2 चम्मच दही मिला लें/ इस पेस्ट को चेहरे पर 20 मिनट लगाएं और फिर धोकर हटा लें/ चेहरे को ठंडक मिलती है और स्किन निखरी हुई दिखती है। एक कप पिसे पपीते में आधा चम्मच हल्दी मिला कर चेहरे पर लगाए और 15 मिनट बाद चेहरे को धो डालें / इस फेस पैक को लगाने पर स्किन को एंटी.बैक्टीरियल गुण भी मिलते हैं और यह त्वचा में निखार लाता है।

तरबूज का जूस प्रयोग करें

तरबूज का जूस एक अच्छा स्किन टोनर है और रूखेपन को कम भी करता है। यह त्वचा को ठंडक, रिफ्रेश और कोमल बनाता है। इसका रस चेहरे पर 20 मिनट तक लगाएं और फिर पानी से धो लें। तरबूज फेस मास्क बनाने के लिए एक चमच्च बेसन में एक चमच्च दूध और आधा चमच्च तरबूज का रस मिलाएं / इस पैक को चेहरे पर लगा लें/जब फेस पैक आधा सूख जाये तो ताजा ठण्डे पानी से धो डालिये/ इसके नियमित सेवन से चेहरे की रंगत में सुधार होगा और त्वचा ग्लो करने लगेगी/ तरबूज के छिलकों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें / इन टुकड़ों को चेहरे पर हल्के हाथों से रगड़ें / कुछ मिनटों तक छोड़ दें और फिर ठंडे पानी से धो डालें। सभी त्वचा के लिये फ्रूट मास्क केला, सेब, पपीता और संतरा जैसे फलों को मिक्स कर के मास्क बना कर चेहरे पर लगाएं। 30 मिनट के बाद चेहरे को धो लें। इससे चेहरे को ठंडक पहुंचेगी, डेड स्किन साफ होगी और सन टैनिंग मिटेगी। लेखिका अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेषज्ञ हैं और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय हैं।

हिंदी-चीनी भाई-भाई से भारत फर्स्ट: दक्षिण एशिया के बदलते शक्ति संतुलन की कहानी...

जब अंग्रेजों ने भारतीय उपमहाद्वीप को छोड़ा, तो उन्होंने न केवल विभाजित क्षेत्र छोड़े; बल्कि वे विवादित सीमाएं, अनसुलझी रणनीतिक दरारें और एक ऐसी राजनीतिक मानसिकता भी छोड़ गए जो दक्षिण एशिया को दशकों तक अस्थिर रखने के लिए बनाई गई थी। ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति सीधी थ — 'बांटो, प्रभावित करो और नियंत्रण करो।' सीमाएं इस तरह से खींची गई जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि पूरे क्षेत्र में भविष्य के विवाद सुलगते रहें। भारत के विभाजन के बाद, स्वतंत्र भारत को आकार देने वाले कई नीति निर्माताओं का मानना था कि औपनिवेशिक शासन से उभरने वाले राष्ट्र एक समान सभ्यतागत आघात (ष्द्व1द्वद्यद्व5ड्डह्लद्बश्ठ्ठड्डद्य ह्लह्मड्डह्वद्वड्ड) साझा करते हैं, और इसलिए वे स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के साथ सहयोग करेंगे। इसी मानसिकता के परिणामस्वरूप पंचशील समझौता, प्रसिद्ध नारा 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' और बाद में इंद्र कुमार गुजराल द्वारा प्रतिपादित 'गुजराल सिद्धांत' (तह्वद्भह्मड्डद्य ठ्ठश्ष्ह्लह्मद्बठ्ठद्ग) जैसे विचार सामने आए। भारत ने अपने पड़ोसियों — नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और भूटान — को रणनीतिक बफर के रूप में नहीं, बल्कि एक बड़े क्षेत्रीय परिवार के सदस्यों के रूप में देखा। भारत का मानना था कि दक्षिण एशिया के सबसे बड़े देश के रूप में, बदले में किसी चीज़ की उम्मीद किए बिना अपने पड़ोसियों का समर्थन करना उसकी नैतिक जिम्मेदारी है।

?हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति शायद ही कभी भावनात्मक आदर्शवाद को पुरस्कृत करती है। समय के साथ, भारत की सद्भावना को ताकत नहीं, बल्कि रणनीतिक मजबूरी के रूप में समझा जाने लगा। पाकिस्तान ने 1947-48 में कश्मीर पर हमला किया, चीन ने 1962 में भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ा, फिर भी भारत दशकों तक सह-अस्तित्व, संयम और समझौते की भाषा के माध्यम से काम करता रहा। भारत ने 1971 में बांग्लादेश बनाने में मदद की, 1988 में मालदीव में तख्तापलट रोकने के लिए हस्तक्षेप किया, श्रीलंका में सेना तैनात की और नेपाल को खुली सीमाएं और आर्थिक पहुंच प्रदान की। फिर भी, समय के साथ, इनमें से कई देशों ने घरेलू राजनीति के एक उपकरण के रूप में भारत-विरोधी बयानबाजी का उपयोग करना शुरू कर दिया।

?1990 के दशक में, गुजराल सिद्धांत ने औपचारिक रूप से इस दृष्टिकोण को संस्थागत रूप दिया। सिद्धांत सीधा था: भारत छोटे पड़ोसियों से पारस्परिकता (ह्द्गष्द्बश्चह्ह्रष्द्बह्ल4) की मांग नहीं करेगा। कोई भी दक्षिण एशियाई देश अपनी धरती का उपयोग दूसरे क्षेत्रीय देश के खिलाफ नहीं होने देगा, कोई भी राष्ट्र दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, और सभी विवादों को बातचीत के माध्यम से शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाया जाएगा। लेकिन कारगिल युद्ध ने एक कड़वी हकीकत उजागर कर दी — केवल सद्भावना ही सुरक्षा की गारंटी नहीं दे सकती। धीरे-धीरे, भारत की रणनीतिक मानसिकता बदलने लगी। 2014 के बाद, यह बदलाव खुलकर सामने आया जब जोर 'नेबरहुड फर्स्ट' (पड़ोसी पहले) से हटकर 'भारत फर्स्ट' (भारत पहले) पर आ गया। भारत ने संकेत देना शुरू कर दिया कि सहयोग जारी रहेगा, लेकिन राष्ट्रीय हितों की कीमत पर कभी नहीं। पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक, डोकलाम में भारत का कड़ा सैन्य रुख, गलवान घाटी गतिरोध के बाद सीमा पर बुनियादी ढांचे में तेजी लाना, और श्रीनगर तथा अरुणाचल प्रदेश में जी20 बैठकों की मेजबानी करना कोई प्रतीकात्मक संकेत नहीं थे; ये रणनीतिक घोषणाएं थीं कि भारत बदल चुका है। इसी अवधि के दौरान, भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा और तेजी से तीसरी सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हुआ।

?आज, जब नेपाल लिपुलेख दर्रा, कालापानी और लिंपियाधुरा को अपने मानचित्रों और मुद्रा नोटों पर रखता है, जब मालदीव में 'इंडिया आउट' अभियान उभरता है, या जब बांग्लादेश और श्रीलंका में भारत-विरोधी बयानबाजी सतह पर आती है, तो इन घटनाक्रमों को बदलते क्षेत्रीय शक्ति संतुलन की प्रतिक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए। पहले, भारत अक्सर संयम, समझौता और तालमेल का रास्ता चुनता था। आज, भारत खुलकर 'भारत फर्स्ट' का दावा करता है। संदेश स्पष्ट है: सहयोग का स्वागत है, लेकिन भारत के राष्ट्रीय हित गैर-परक्राम्य (ठ्ठश्ठ्ठ-ठ्ठद्गद्दश्ह्लद्बड्डड्ढद्यद्ग) हैं। आधुनिक भारत भावनात्मक कूटनीति से रणनीतिक यथार्थवाद (ह्यह्लह्म्ड्डह्लद्गद्दद्बष् ह्म्द्गड्डद्यद्बह्यद्व) की ओर बढ़ गया है। दुनिया बदल गई है, और भारत भी इसके साथ बदल गया है। यदि पड़ोसी देश इस नई वास्तविकता के साथ तालमेल बिठाते हैं, तो दक्षिण एशिया स्थिर और सहयोगी बना रह सकता है। यदि नहीं, तो भारत स्वतंत्र और निर्णायक रूप से अपने हितों की रक्षा के लिए तैयार है। यही कारण है कि आज भारत को पूरे क्षेत्र में तीखी आलोचना और अधिक सम्मान दोनों मिल रहे हैं। अंततः, एक पुरानी कहावत वर्तमान समय को पूरी तरह से बयां करती है: 'हाथी चलता रहता है और कुत्ते भौंकते रहते हैं।' भारत ने अपना रास्ता चुन लिया है। 'भारत फर्स्ट, भारत सुप्रीम' अब केवल एक नारा नहीं है — यह भारत की नई विदेश नीति का परिभाषित दर्शन बन चुका है।

लेखक:
कर्नल देव आनंद
लोहामरोड़
सुरक्षा एवं
अंतर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ...

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया

दीपाली वार्ष्णेय अग्रवाल
सुजोक थैरेपिस्ट,
नेचरोपैथी

बाल

रूखे और बेजान बालो को सही करने के लिए अलसी के बीज और देना मेथी को पानी में उबालें उस पानी को छानकर उसमे त्रिफला चूर्ण या आंवले का चूर्ण मिलाएं, साथ ही थोड़ा नारियल का तेल या केस्टर आयल मिलाएं, फिर इसको बालों में लगा लें एक घंटे बाद सिर धो लें, ऐसा हफ्ते में दो बार करें। इससे बालों को नरिशमेंट मिलेगा, बाल सॉफ्ट और चमकदार होंगे।

नागरमोथा

ये एक आयुर्वेदिक औषधि हैँ, ये वात और पित्त दोनों ठीक करती है, लूज़ मोशन, पेट मैँ आँव होना, स्किन एलर्जी, जिन माताओ को दूध कम

आता हो, या किसी कारण दूध बच्चे को ना पचता हो, यूरिन इन्फेक्शन, सभी मे ये बहुत लाभकारी है। इसको पाउडर बनाकर आधा चम्मच एक बड़े कप पानी मैँ उबालें, दो चुटकी सोंठ पाउडर डालें, काढ़ा बनाकर सुबह पियें। ये दीपनपाचन करता है, जठरागनी सही करके पाचन सही करता है।

गोंद कतीरा

गर्मियों मैँ भूख बढ़ाने के लिए, पाचन सही रखने के लिए, यूरिन इन्फेक्शन, यूरिन मैँ जलन या कम आना, इन सभी मैँ गोंदकतीरा बहुत फायदेमंद है, इसको बनाने के लिए एक जार मैँ कुछ पत्ते पुदीना, एक से दो चम्मच भीगा हुआ गोंद कतीरा, काला नमक, नींबू, और थोड़ा गुड़ डालकर पीस लें, फिर मटके का ठंडा पानी मिलाकर पिए।

बार बार यूरिन आने की समस्या (बहुमूत्र)

बहुमूत्र रोग बार बार यूरिन आना,ये रोग बच्चों और बुजुर्गों में अधिक होता है। इस रोग मे, कब्ज हो जाती है शरीर दुर्बल होने लगता है।कमर और कमर के नीचे हिस्से में दर्द होता है।

आँवले के चूर्ण में गुड़ मिलाकर दिन में दो बार लेने से लाभ होता है।

काले तिल, अजवाइन को मिलाकर पाउडर बना लें, इस पाउडर को गुड़ के साथ खाने मे फायदा होता है।

सुबह खाली पेट एक चम्मच अदरक का रस लेने से भी ये समस्या खत्म होती है।

पतले गाय के दूध में 4 छुआरे उबालकर रात को सोने से पहले खाने से भी आराम मिलता है।

कब्ज

- कब्ज होने के मुख्य कारण
- रूखा खाना खाना
- पाचन शक्ति कमज़ोर होना
- पानी की कमी
- शारीरिक व्यायाम की कमी
- नकारात्मक सोच
- खाना हमेशा रसेदार सब्जी दाल के साथ खाना चाहिए
- खाने के बाद 45 मिनिट तक पानी नहीं पीना चाहिए
- कब्ज दूर करने के लिए ज्यादा पानी पीना ही पर्याप्त नहीं बल्कि जिनमे ज्यादा पानी और फाइबर हो ऐसा भोजन करना चाहिए-

जैसे सलाद और फल
व्यायाम और प्राणायाम रोज करें।
सोच सकारात्मक रखें
सुपाच्य भोजन करें।

वेट बढ़ाना

अगर किसी को वेट बढ़ाना है तो सुबह खाली पेट एक नारियल का पानी लें, उसमें रातभर भीगा गोंद कतीरे के दो चम्मच डालें, साथ ही एल चम्मच गुलकंद डालकर मिक्सी में चला लें, फिर इसे धीरे धीरे पियें।

अति भोजनमः रोग मूलम

मतलब ज्यादा भोजन करना हमेशा ही नुकसानदायक रहता है।

हमारे शरीर मे 72 प्रतिशत पानी है अत: अन्न और पानी का इसी प्रकार सन्तुलन बनाये रखें। हमारे खाने मैं 40 प्रतिशत भाग कच्चे फल और सब्जियों का होना चाहिए।

आयुर्वेद मैं कहा जाता है कि हम मरा हुआ भोजन अर्थात खूब पकाया हुआ भोजन ग्रहण करते हैं और उस भोजन से उत्तम स्वस्थ की कामना रखते हैं, ये कैसे संभव है।

सदस्यता फार्म

राजस्थान की आवाज...
राजस्थान दर्शन
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान कार्यालय

A-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन.: 0141-2521000, मो.: 9413840652-53
7737275324, 9667669888
E-mail: rajasthandarshanpartika@gmail.com

मैं राजस्थान दर्शन पत्रिका का निम्न अवधि के लिए सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ।

अवधि	शुल्क
वार्षिक	540/-
5 वर्ष	2500/-
10 वर्ष	5100/-
आजीवन	10,000/-

नाम ....
पता ....
....
....
फोन (निवास)..
(ऑफिस)..
मोबाइल ....
ई-मेल ....
वेबसाइट ....
....
मै मैसर्स ....
राजस्थान दर्शन हिन्दी मासिक पत्रिका का वार्षिक/पांच वर्ष/दस वर्ष के लिए सदस्य बनना चाहता हूँ। नकद अथवा चैक/डी.डी.नं.
....
अदाकर्ता बैंक ....
दिनांक .... रू. का संलग्न है।

वास्ते अधिकृत हस्ताक्षर (मय सील)

कृपया चैक/डी.डी. ''राजस्थान दर्शन'' के नाम से बनावें।

विज्ञापन दरें

राजस्थान की आवाज...
राजस्थान दर्शन
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान कार्यालय

A-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन.: 0141-2521000, मो.: 9413840652-53
7737275324, 9667669888
E-mail: rajasthandarshanpartika@gmail.com

विज्ञापन दरें

अंतिम कवर मल्टी कलर	51,000/-
दूसरा कवर मल्टी कलर	20,000/-
पूर्ण पृष्ठ मल्टी कलर	15,000/-
आधा पृष्ठ मल्टी कलर	8,000/-
पूर्ण पृष्ठ श्याम श्वेत कलर	10,000/-
आधा पृष्ठ श्याम श्वेत कलर	6,000/-
एक चाथाई पृष्ठ श्याम श्वेत	3000/-

मैं ....अपनी फर्म मैसर्स .... का विज्ञापन राजस्थान दर्शन हिन्दी मासिक पत्रिका में साईज ....के लिये देना चाहता हूँ। नकद अथवा चैक/ डि.डी.नं. ....
अदाकर्ता बैंक ....
दिनांक ....राशि ....
रूपये का संलग्न है।

वास्ते अधिकृत हस्ताक्षर (मय सील)

कृपया चैक/डी.डी. ''राजस्थान दर्शन'' के नाम से बनावें।

SHAMBHU'S®
COFFEE BAR
27 SAAL SE
GUJARAT
KA TRUSTED
COFFEE BRAND
India And Canada
SHAMBHU'S
CORPORATE OFFICE
H.L, Devangan Flats, 1-2, Commerce College Rd,
New Commercial Mills Staff Society, Navrangpura,
Ahmedabad, Gujarat 380006
M : +91 70980 40652 | www.shambhuscoffeebar.com

डाक प्रेषण तिथिः प्रत्येक माह की 2 तारीख
RNI No.- RAJHIN/2013/52435
डाक पंजीकरण संख्या : Jaipur City/414/2022-24

प्रकाशन तिथिः 01 जून, 2026
पृष्ठ संख्याः 40, जून, 2026

ब्रह्मलीन महन्त

श्री श्री 1008 श्री पीताम्बर नाथ जी (पोमजी महाराज)

श्री बाबा रामदेव जी मठ- खन्दरा,
तह. शिवगंज, जिला- सिरोही (राज.)

ब्रह्मलीन महन्त
श्री श्री 1008 श्री पीताम्बर नाथ जी
(पोमजी महाराज)

गादिपति श्री श्री 1008 श्री रामनाथ जी महाराज

ब्रह्मलीन महन्त श्री श्री 1008 श्री पीताम्बर नाथ जी (पोमजी महाराज) की तृतीय पुण्यतिथि पर न्याय मूर्ति परमानन्द झा प्रथम उपराष्ट्रपति नेपाल सरकार की ओर से सामाजिक सरोकार के कार्यों व सनातन धर्म को जन-जन तक पहुंचाने के लिए गादिपति श्री श्री 1008 श्री रामनाथ जी महाराज को अमृत संदेश पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

निवेदक : —

गादिपति श्री श्री 1008 श्री रामनाथ जी महाराज

समस्त ग्रामवासी, खन्दरा (जिला- सिरोही)

प्रतिष्ठा में
....
....
....

राजस्थान की आवाज ...
राजस्थान दर्शन
पता न मिलने पर पुनः इस पते पर भेजे
प्रधान कार्यालयः ए-11, प्रथम मंजिल,
करधनी शॉपिंग सेन्टर, मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन नं. : 0141-4819957